पेन्टाटय़ूक

अध्याय 1

पेन्टाटय़ूक का परिचय

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना 1
आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण 1
पूर्वधारणाएं **2**
प्रकृतिवाद 2
ऐतिहासिक विकास 2
लेखनकारिता **4**
ईश्वरीय नाम 5
दोहराए गए वृत्तांत 6
विसंगतियां 6
व्याख्यात्मक रणनीतियाँ **7**
स्रोत आलोचना 7
स्वरूप आलोचना 8
परम्परा आलोचना 9
संपादन आलोचना 9
समकालीन आलोचना 10
आधुनिक सुसमाचारीक दृष्टिकोण 10
पूर्वधारणाएं **11**
आलोकिकतावाद 11
ऐतिहासिक विकास 12
लेखनकारिता **12**
बाइबल के प्रमाण 12
मूसा की मूलभूत व्यवस्था 14
व्याख्यात्मक रणनीतियाँ **19**
विषयगत 20
ऐतिहासिक 20
साहित्यिक 21
उपसंहार 22

प्रस्तावना

क्या आपने कभी सोचा है कि मसीही विश्वास कितना अलग होता यदि हमारे पास बाइबल नहीं होती? अगुवे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक शिक्षाओं को पारित करते जाते, लेकिन उनके विचारों का मूल्यांकन करने के लिए कोई तरीका नहीं होता, कोई ऐसा मानक नहीं होता जिसे द्वारा भिन्न विचारों के बीच सही गलत का फैसला किया जा सके।

यह परिस्थिति कुछ वैसी ही होती जैसी मूसा के दिनों में बहुत से इस्राएलियों की थी। उनके पूर्वजों ने अतिप्राचीन इतिहास, कुलपिताओं और उनसे जुडी सारी कहानियों को उन्हें बताया था और यह भी, कि किस तरह परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र से छुटकारा दिया, उन्हें अपनी व्यवस्था दी, और प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर उनकी अगवाई की। लेकिन प्रश्न यह उठ रहे थे कि इस्राएल की वर्तमान परिस्थितियों, और भविष्य के लिए परमेश्वर की क्या योजना है, और इस बारे में उनके विश्वास को किस दिशा में बढ़ना था? इन विषयों पर अलग-अलग विचार मौजूद थे और उन्ही विचारों के बीच उन्हें फैसला लेना था, परन्तु कैसे? इन्ही सब प्रश्नों का उत्तर देने हेतु परमेश्वर ने बाइबल की पहली पांच पुस्तकों को उन्हें दिया जो उनके विश्वास के मानक या मापदंड के रूप में इस्तेमाल की जा सके। आज उन्ही पुस्तकों को हम पेन्टाटयूक के नाम से जानते हैं।

हमारी पेन्टाटयूक की श्रृंखला का यह पहला पाठ है, और हमने इसका शीर्षक रखा है, "पेन्टाटयूक का परिचय।" इस पाठ में हम परिचय देंगे कि किस तरह उत्पत्ति से लेकर व्यवस्थाविवरण की पुस्तकों ने इस्राएल के विश्वास के मानक के रूप में कार्य किया।

पेन्टाटयूक के विषय में हमारा परिचय दो मुख्य भागों में विभाजित होगा। सबसे पहले, हम बाइबल के इस भाग के लिए आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोणों का वर्णन करेंगे। ये दृष्टिकोण उन टीकाकारों के विचारों को पेश करते हैं जो पवित्रशास्त्र के पूर्ण अधिकार से इनकार करते हैं। दूसरा, हम आधुनिक सुसमचारिक दृष्टिकोणों की भी पता लगायेंगे, अर्थात बाइबल के उन विद्वानों के विचार जो इसको परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया वचन मानते है तथा बाइबल के पूर्ण अधिकार की पुष्टि भी करते हैं। आइए पहले पेन्टाटयूक के लिए आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोणों को देखते हैं।

आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण

हालांकि हमारे पाठ एक अलग दिशा में जायेंगे, हमारे लिए यह जानना महत्वपूर्ण है, कि, बाइबल के कई आधुनिक विद्वानों ने पेन्टाटयूक के ईश्वरीय प्रेरणा और अधिकार का खंडन किया है, भले ही ये गिनती में कम हो। उन्होंने पारंपरिक यहूदी और मसीही दृष्टिकोण का भी खंडन किया है जो यह कहता है कि पेन्टाटयूक मूसा के दिनों से आया, जो इस्राएल का महान व्यवस्था देने वाला था। बहुत से टिकाकारों, शिक्षकों, पादरियो, और यहां तक की साधारण लोगों ने इन विचारों का समर्थन किया है कि पवित्र-शास्त्र के गंभीर छात्रों के लिए उनसे बचना लगभग असंभव है। और इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि हमें इस बात की कुछ समझ हो कि कैसे आलोचनात्क विद्वानों ने बाइबल के इस भाग का वर्णन किया है।

> बीते 150 से 200 सालों में, आलोचनात्मक विद्वानों ने पेन्टाटयूक के अध्ययन में बहुत ज्यादा ध्यान दिया है। और यद्यपि हम सुसमचारिक मसीही उन कई

> दृष्टिकोणों से असहमत हो सकते है, फिर भी हमारे लिए यह जानना आवश्यक है कि पुराने नियम के कई विद्वान क्या सोचते हैं जिससे कि हम उनके दिए गए सुझावों पर सही ढंग से अपनी प्रतिक्रिया दे सकें। हमें यह जाने बिना की हमारे आस पास क्या चल रहा, केवल निर्वात में या निर्थक बाइबल अध्ययन नहीं करना चाहिए। जैसे कि होता है। हमें अपने अध्ययन को अन्य विद्वानों के सुझाव और उन्होंने क्या कहा है, उसके प्रकाश में करने की जरूरत है।
>
> डॉ. जॉन ओसवॉल्ट

पेन्टाटयूक के लिए आधुनिक आलोचनात्मक तरीकों को समझने के लिए, हम तीन बातों पर विचार करेंगे: सबसे पहले, कुछ महत्वपूर्ण पूर्वधारणाएं जिन्होंने आलोचनात्मक दृष्टिकोणों को प्रभावित किया; दूसरा, पेन्टाटयूक के लेखक पर आलोचनात्मक दृष्टिकोण; और तीसरा, ऐसी कई महत्वपूर्ण व्याख्यात्मक रणनीतियाँ जिनका प्रयोग आलोचनात्मक विद्वानों ने किया था। पहले कुछ पूर्वधारणाओं पर विचार करते हैं जिन्होंने इन तरीकों को प्रभावित किया है।

पूर्वधारणाएं

अधिकांश भाग के लिए, बाइबल के इस भाग पर आधुनिक आलोचनात्मक विचार सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के पश्चिमी यूरोप में ज्ञानोदय के बौद्धिक विचारधाराओं से सीधे प्रवाहित हुए थे।

अपने उद्देश्यों के लिए, हम दो महत्वपूर्ण पूर्वधारणाओं पर ध्यान केंद्रित करेंगे जो ज्ञानोदय से निकले थे। इन दोनों ही दृष्टिकोणों ने पेन्टाटयूक की आलोचनात्मक व्याख्याओं को गहराई से प्रभावित किया है। सबसे पहले, हम प्रकृतिवाद की अवधारणा पर विचार करेंगे। और दूसरा, हम इस्राएल के विश्वास के ऐतिहासिक विकास के विषय में मौजूद पूर्वधारणाओं को देखेंगे। आइए प्रकृतिवाद के साथ शुरू करते हैं।

प्रकृतिवाद

संक्षेप में, ज्ञानोदय प्रकृतिवाद में विद्वानों का प्रमुख विचार यह था कि अगर आध्यात्मिक वास्तविकताएं वास्तव में अस्तित्व में हों भी, तौभी दृश्यमान संसार पर उनका कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं है। और इसी वजह से, शिक्षण अनुसंधान में उनकी कोई जगह नहीं थी। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक, पश्चिमी देशों में प्रकृतिवाद मसीही धर्म के अध्ययनों सहित शिक्षण के हर क्षेत्र पर हावी हो गया था। बाइबल के अध्ययन में प्रकृतिवाद का एक प्रमुख प्रभाव यह था कि बड़े और सम्मानित विद्वानों ने बहुत सालों पुराने यहूदी और मसीही विश्वास को, कि पेन्टाटयूक परमेश्वर द्वारा प्रेरित था, खारिज कर दिया था। और इसलिए, बहुत से लोगों ने पेन्टाटयूक का उसी रीति से अध्ययन किया जैसे उन्होंने सामान्य रीति से किसी अन्य प्राचीन संस्कृतियों के धार्मिक लेखों का किया था। इस दृष्टिकोण से, पेन्टाटयूक में, किसी भी अन्य मानव लिखित लेख के सामान ही, सभी प्रकार की त्रुटियां, विरोधाभास और यहाँ तक कि इतिहास का जानबूझकर गलत चित्रण एवं झूठा ईश्वरीय-ज्ञान पाया जाता है।

काफी दिलचस्प बात है, कि जिस तरह से पूर्वधारणाओं ने प्रकृतिवाद को जन्म देकर आधुनिक विद्वानों को पेनेटाटयूक की प्रेरणा और अधिकार को खारिज करने के लिए मुक्त किया था, उन्होंने इस्राएल के विश्वास के ऐतिहासिक विकास पर भी कुछ विशेष दृष्टिकोणों को जन्म दिया।

ऐतिहासिक विकास

उन्नीसवीं सदी के शुरूआत तक, प्रकृतिवाद ने उस बात को जन्म दिया जिसे हम "प्राकृतिक ऐतिहासिकवाद” कह सके हैं। इस विश्वास का मत था कि किसी भी विषय को समझने के लिए सबसे

अच्छा तरीका यह समझना है कि कैसे यह प्राकृतिक कारणों के माध्यम से समय के साथ विकसित हुआ। उन्नीसवी शताब्दी के जीव विज्ञानियों ने इस बात को समझाने में काफी समय व्यतीत किया था कि पृथ्वी पर कैसे जीवन की शुरू आत हुई और सहस्र-शताब्दियों के दौरान कैसे उसका विकास हुआ। भाषाविदों ने मानवीय भाषाओं के ऐतिहासिक विकास को ढुंढ़ा, पुरातत्ववेत्ताओं ने मानव समाजों के प्राचीन पृष्ठभूमियों और प्रगतियों का पुनः-निर्माण किया, और धर्म के क्षेत्र में विद्वानों ने विश्व के धर्मों के प्राकृतिक, ऐतिहासिक क्रमागत विकास का वर्णन करने के लिए इसी तरह की प्राथमिकताएं को महत्त्व दिया।

बहुत हद तक, पहले के आधुनिक पश्चिमी विद्वानों ने दुनिया के धर्मों के क्रमागत विकास का पुनः-निर्माण इसलिए किया ताकि मानव समाज के विकास के प्रति अपनी समझ के साथ उसे संरेखित कर सके। उदाहरण के लिए, यह आमतौर पर माना जाता था कि प्राचीन लोगों ने पहले आदिम जनजातीय समाज का गठन किया है जो की जीववाद को मानता था, अर्थात ऐसा विश्वास जो यह विश्वास करता था कि प्रकृति में वस्तुओं के साथ आत्माएं जुड़ी थीं। जैसे-जैसे समय बीतता गया, आदिम जनजातीय समाजों ने बड़े राज्यों को बनाया जो बहुदेववाद को मानते थे, अर्थात कई देवताओं में विश्वास। जैसे-जैसे विभिन्न राज्यों ने बड़े संघ का गठन किया, धर्म बहुदेववाद से एकैक देववाद की ओर बढ़ा, मतलब एक ऐसा विश्वास जिसके अनुसार एक देवता बाकी सभी देवताओं के बीच सबसे बड़ा था। अंत में, बड़े देशों और साम्राज्यों के विकास के साथ, शक्तिशाली सम्राट और याजक अक्सर अपने देशों को एकैक देववाद से हटाकर एक-ईश्वरवाद की ओर ले गए, यानी एक ईश्वर पर विश्वास। और इस प्राकृतिक ऐतिहासिक दृष्टिकोण में, जब यह अत्यधिक विकसित चरण आया तब से धर्म के मानदंडों का संहिताबद्ध किया जाना शुरू हुआ, या उन्हें लिखा जाने लगा। इस समय से पहले तक, धर्म एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक केवल मौखिक और अनुष्ठानों की परंपराओं के द्वारा ही पारित होता था।

अब, हमें ध्यान देना चाहिए कि उत्तरकालीन बीसवीं सदी में मानव विज्ञानियों ने इस विचार का खंडन किया कि धर्मों का विकास इतने सरल तरीके से हुआ था। लेकिन इन दृष्टिकोणों ने उन तरीकों को गहनता से प्रभावित किया जिनमें बाइबल के विद्वानों ने आधुनिक समय की शुरू आत में पेन्टाटच्यूक का अध्ययन किया था। और आज भी उन्होंने बाइबल की शिक्षा को प्रभावित करना जारी रखा है।

> जिसे हम "आलोचनात्मक अध्ययन" कहते हैं वह अक्सर मानता है कि पुराना नियम आदिम और धर्म के कम जटिल रूप से अधिक जटिल, धर्म के अधिक पेचीदा रूप से होकर विश्वासों के विकास को दर्शाता है, जिसमे बाद वाला पहले वाले से बेहतर है। इस बारे में हम दो बातें कह सकते हैं। पहली बात, सकारात्मक रुख अपनाते हुए, हम कह सकते हैं कि जिस ढंग से परमेश्वर द्वारा स्वयं का प्रकटीकरण किया गया है उसमें एक विकास दिखाई देता है। जिसे हम "जैविक विकास," कहते है वह बाइबल स्वयं हमें दिखाती है जहां परमेश्वर के बारे में सिद्धांत और विषय और विचार बीज से होकर पूर्ण रूप से विकसित होते हैं, और इसलिए बाइबल भी अपने प्रगतिशील संदेश के बारे में बात करती है। और हां, बाइबल और पेन्टाटच्यूक के भीतर प्रगति का एक रूप पाया जाता है। यह परमेश्वर के प्रकाशन की शुरू आत से पूर्ण खुलासे तक एक गति है, इसे बेहतर रूप से समझने के लिए आप समय अंतराल के साथ एक फूल के धीरे-धीरे खिलने के चित्र की कल्पना कर सकते हैं। लेकिन, नकारात्मक रीति कहे तो, आलोचनात्मक विद्वान आम तौर पर मानव जाति के एक क्रमागत विकासवाद या विकास के दृष्टिकोण को मानते हैं जो विकास की अनिवार्यता को मानता है.. । अब, हमें सिर्फ इतना करना है कि संसार में अपने चारों ओर देखना है कि विकास की अनिवार्यता एक बड़ा मिथक है। हां, हम विकास करते हैं, लेकिन जैसे-जैसे हम विकास करते हैं, हमारा पतन भी होता है। इसलिए, आधुनिक अभिमानों के बारे में कुछ ऐसा है जो पुरानी चीज़ों को अधिक हीन रूप में देखता है, जबकि

> वास्तव में, यह एक दार्शनिक धारणा है, ऐसी कोई भी बात स्वयं बाइबल के भीतर नहीं पाई जाती है।
>
> रेव्ह. माइकल जे. ग्लोडो

दुनिया के धर्मों पर प्रारंभिक आधुनिक दृष्टिकोण जाहिर तौर पर उस दृष्टिकोण से अलग थे जिसमें बाइबल इस्राएल के विश्वास के विकास का चित्रण करती है। पेन्टाटच्यूक लगातार एक-ईश्वरवाद के रूप में इजरायल के विश्वास को प्रस्तुत करता है। आदम और हव्वा से लेकर, नूह तक, कुलपिताओं तक, इस्राएल के गोत्रों के प्रमुखों तक, विश्वासयोग्य लोगों ने सभी वस्तुओं के सृष्टिकर्ता के रूप में एक सच्चे परमेश्वर की आराधना की है। और, उत्पत्ति से जितना भी हम जानते हैं, इन प्रारंभिक चरणों में, यह सच्चा, एक-ईश्वरवाद विश्वास एक पीढ़ी से दूसरी तक मौखिक एवं अनुष्ठानिक परंपराओं के माध्यम से पारित हुआ था।

फिर, पेन्टाटच्यूक के अनुसार, मूसा के दिनों में एक निर्णायक बदलाव हुआ। इस समय तक, इस्राएल के विश्वास के मापदंड संहिताबद्ध होने लगे थे। मूसा ने पहले परमेश्वर की व्यवस्था को वाचा और दस आज्ञाओं की पुस्तक में लिखा और, इस्राएल के विश्वास का मार्गदर्शन करने के लिए, जिसे हम बाद में देखेंगे, बाकी के पेन्टाटच्यूक की रचना की तथा इस्राएल को राष्ट्र बनने के लिए तैयार किया था। इसलिए,बाइबल के अनुसार, इससे पहले कि इस्राएल के पास राजा और मंदिर हुए , उसका धर्म मूसा के समय से पवित्र लेखों की ओर उंमुख हो चूका था।

बाइबल की यह प्रसिद्ध कहानी चाहे जितनी भी सरल और सीधी क्यों न हो, आधुनिक आलोचक इस समय रेखा को प्रकृतिवादी ऐतिहासिकता के कारण असंभव मानते हैं। आधुनिक आलोचनात्मक विद्वानों ने बाइबल में दर्शायी गयी इस्राएल के विश्वास की तस्वीर को विखंडित किया था और उन्होंने इसको आधुनिक विचारों के अनुरूप करने के लिए कि कैसे सभी आदिम धर्मों का विकास हुआ, पुनर्निर्मित किया इस दृष्टिकोण से, इस्राएल के प्रागैतिहासिक पूर्वजों ने आदिवासी जीवात्मावाद को ग्रहण किया। फिर, जैसे-जैसे इस्राएल के गोत्र आपस में जुड़े और उनमें मुखियापन की शुरूवात हुई वैसे वैसे उनके कुलपिता बहुदेवतावाद की ओर मुड़ गए। इस दृष्टिकोण के अनुसार, यदि कोई मूसा नाम का व्यक्ति रहा होगा जिसने मिस्र से बाहर निकलने में इस्राएल का नेतृत्व किया था, तो जिन इस्राएलियों का उसने नेतृत्व किया वे गोत्रों का एक परिसंघ था जिसकी विशेषता एकैक देववाद द्वारा होती थी। और, पवित्र-शास्त्रों के विपरीत, आलोचनात्मक व्याख्याकारों का मानना था कि, सामाजिक विकास के इस चरण पर, यह किसी के लिए भी असंभव है कि वह इस्राएल के विश्वास के मानकों को लिखे। इस तरह के लिखित संहिताएं केवल इस्राएल के शुरू आती राजशाही के दौरान ही उभर सकते थे, जब इस्राएल के राजाओं और याजकों ने इस्राएल के विश्वास को नियंत्रित करने की सोची। अतः आलोचनात्मक विद्वानों के अनुसार, यह राजशाही के समय से ही था कि इस्राएल का धर्म तेजी से एक पुस्तक का धर्म बन गया।

अब जब कि हमने पवित्र-शास्त्र के लिए आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोणों और इस्राएल के विश्वास की ऐतिहासिक विकास की पूर्वधारणाओं को देख लिया है, हमें दूसरे मुद्दे की ओर मुड़ना चाहिए जो इससे काफी संबंधित है। कैसे इन दृष्टिकोणों ने पेन्टाटच्यूक के लेखनकार्य के लिए आलोचनात्मक दृष्टिकोणों को प्रभावित किया?

लेखनकारिता

जैसा कि हमने देखा, आलोचनात्मक व्याख्याकार विश्वास करते थे कि इस्राएल का विश्वास केवल इस्राएल के राजाओं के समय संहिताबद्ध या लिखा जाना शुरू हुआ था। और बेशक, इस धारणा का अर्थ था कि पेन्टाटच्यूक को लिखने में मूसा की कोई भागीदारी नहीं थी। इसके विपरीत, ये पुस्तकें एक लंबी, जटिल प्रक्रिया से पैदा हुई थी जो प्राचीन मौखिक परंपराओं से शुरू हुआ जिन्हें राजाओं के

समय में विभिन्न दस्तावेजों में संकलित किया गया था। और केवल इस्राएल के निर्वासन के दौरान या उसके बाद ही इन दस्तावेजों को पेन्टाटचूक में संपादित एवं संकलित किया गया था वो रूप दिया गया जैसा आज हम उसे पाते है। अब, पवित्र-शास्त्र के विद्यार्थियों ने जब पहली बार सुना कि कई विद्वान पेन्टाटचूक के विकास के इस लंबे इतिहास में विश्वास करते हैं, तो वे हमेशा आश्चर्य व्यक्त करते कि कौन से सबूत इसे प्रमाणित करते हैं।

आलोचनात्मक विद्वानों द्वारा पेश किये गए तीन प्रमुख सबूतों को सारांशित करने के द्वारा हम पेन्टाटचूक के लेखनकारित के लिए इस दृष्टिकोण को देखेंगे। पेन्टाटचूक में पाये जाने वाले ईश्वर के नामों में पायी जाने वाली भिन्नताओं के साथ हम शुरू करेंगे।

ईश्वरीय नाम

प्रारंभिक आलोचनात्मक व्याख्याकारों ने ध्यान दिया था कि पेन्टाटचूक में परमेश्वर के लिए विभिन्न नाम दिए गए हैं। और वे तर्क देते हैं कि ये भिन्नताएं इस्राएल के विश्वास के लंबे क्रमागत विकास के सबूत थे। उदाहरण के लिए, कभी-कभी पेन्टाटचूक केवल इब्रानी शब्द *אֱלֹהִים* (एलोहीम) या “परमेश्वर” का उपयोग करता है। अन्य स्थानों पर, परमेश्वर को *יהוה*(याहवेह) या “यहोवा” कहा गया है। पेन्टाटचूक इन शब्दों को एक दूसरे के साथ और साथ में अन्य शब्दों को भी "यहोवा एलोहीम" या "यहोवा परमेश्वर," और "यहोवा यिरे," या "यहोवा प्रबंध करता है" के साथ जोड़ता है। परमेश्वर को “एल एल्योन” या “अति महान परमेश्वर,” और “एल शड्डाय,” भी कहा गया है, जिसका अनुवाद अकसर “सर्वशक्तिमान परमेश्वर” करा गया है।

अब, यह ध्यान देने योग्य बात है कि, यघपि पेन्टाटचूक परमेश्वर के लिए विभिन्न नामों को दिखाता है, परन्तु यह कोई असामान्य बात नहीं रही होगी । अन्य प्राचीन मध्य-पूर्व के धर्मों के ईश्वरीय नामों की बीसवीं सदी के अनुसंधान ने बताया है कि एक ही लेखक ने अपने देवताओं के लिए कई विभिन्न नामों का उपयोग किया है। फिर भी, पहले के आलोचनात्मक विद्वानों ने सोचा कि पेन्टाटचूक में परमेश्वर के नामों में विविधताएँ संरचना के एक लंबे इतिहास को उजागर करते हैं। वे मानते थे कि परमेश्वर के लिए विभिन्न नाम संकेत देते थे कि एक स्रोत को दूसरे के साथ और फिर अन्य के साथ जोड़ा गया था, और अंततः जिसका परिणाम पेन्टाटचूक में हुआ।

> जब आप पुराने नियम समें से पढ़ रहे होते हैं, तो आपको यह ध्यान देने में बहुत ज्यादा समय नहीं लगता कि वहाँ परमेश्वर के लिए भिन्न-भिन्न नाम हैं। उत्पत्ति 1 में परमेश्वर के लिए नाम है एलोहीम। अचानक से,उत्पत्ति 2 में, आपको यहोवा नाम मिलता है। आलोचनात्मक दृष्टिकोण इसको एक सुसमचारिक व्यक्ति की तिलन में बहुत अलग रीति से समझेगा। एक आलोचनात्मक विद्वान कहेगा कि ये विभिन्न स्रोतों से आते हैं... सुसमचारिक व्यक्ति होने के नाते, मुझे लगता है कि हमें पीछे जाने और बड़ी तस्वीर को समझने की जरूरत है। परमेश्वर एलोहीम है, और वह यहोवा है। एलोहीम परमेश्वर सर्वशक्तिमान है, जो दुनिया के ऊपर विराजमान है, सृष्टिकर्ता है, वह जिसे दुनिया के सभी देश महान शक्ति, परम व्यक्तित्व के रूप में पहचानते हैं। लेकिन इस्राएल देश के साथ वाचा के संबंध में, वह स्वयं को एक बहुत ही निजी नाम में उजागर करता है, अर्थात, यहोवा। वह "मैं हूँ" जो अपने लोगों के लिए होगा और अपने लोगों के साथ होगा। और वह एक वाचा का नाम है क्योंकि इस्राएल परमेश्वर का चुना हुआ वंश हैं।
>
> डॉ. डेविड टाल्ले

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

ईश्वरीय नामों में भिन्नताओं के अलावा, कई आलोचनात्मक विद्वानों ने पेन्टाटयूक की लेखनकारिता पर अपने दृष्टिकोणों को उस बात पर ध्यान आकर्षित करते हुए समर्थन दिया है जिसे वे "दोहराए गए वृत्तांत " कहते हैं।

दोहराए गए वृत्तांत

यह देखना मुश्किल नहीं है कि पेन्टाटयूक में कई अनुच्छेद एक दूसरे के समान हैं। लेकिन आलोचनात्मक व्याख्याकारों ने तर्क दिया है कि ये अनुच्छेद लोगों के विभिन्न समूहों के बीच विभिन्न मौखिक परंपराओं और प्रक्रियाओं को दर्शाते हैं, जिसके द्वारा ये विवरण पेन्टाटयूक में लिखे गए थे।

उदाहरण के लिए, व्याख्याकारों ने अकसर उस अनुच्छेद पर उंगली ऊठाई है जिसे वे उत्पत्ति1:1–2:3 और उत्पत्ति 2:4-25 में “सृष्टि के दो विवरण” कहते हैं। उन्होंने अब्राहम और इसहाक की कहानियों के बीच समानताओं की तरफ इशारा किया है जो उत्पत्ति 12:10-20; 20:1-18; और 26:7-11 पायी जाति है जहाँ उन्होंने झूठ बोला और अपनी पत्नियों को खतरे में डाला था। दोनों पारंपरिक यहूदी और मसीही व्याख्याकारों ने इन समानताओं को तर्कपूर्ण रीति से समझाया है। लेकिन आलोचनात्मक विद्वानों का कहना है कि ये विवरण अलग मौखिक परंपराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें लिखा गया और बाद में पेन्टाटयूक में शामिल किया गया था।

तीसरे स्थान पर, आलोचनात्मक विद्वानों ने पेन्टाटयूक में नज़र आने वाली विसंगतियों की ओर इशारा किया हैं। और वे दावा करते हैं कि ये तथाकथित विसंगतियां बाइबल के लेखनकारीता के इस हिस्से और उनके जटिल पुनर्निर्माण का समर्थन करती हैं।

विसंगतियां

उदाहरण के लिए, उन्होंने अक्सर निर्गमन 12:1-20 और व्यवस्थाविवरण 16:1-8 में फसह के पर्व की विधियों के बीच भिन्नताओं को नोट किया है। और उन्होंने निर्गमन 20:1-17 और व्यवस्थाविवरण 5:6-21 में दस आज्ञाओं के बीच भिन्नताओं पर उंगली ऊठाई है। एक बार फिर, पारंपरिक यहूदी और मसीही व्याख्याकारों ने दिखाया है कि इन विसंगतियों और अन्य असमानताओं का समाधान किया जा सकता है। लेकिन आलोचनात्मक व्याख्याकारों ने इन्हें मौखिक परंपराओं और लिखित स्रोतों के एक लंबे, जटिल इतिहास के रूप में देखा है जिन्हें पेन्टाटयूक में एक साथ रचा गया और वही आज हमारे पास है।

> जब आप बाइबल और विशेष रूप से पेन्टाटयूक को पढ़ते हैं, तो आप साहित्य के बहुत से विभिन्न प्रकारों को पढ़ रहे होते हैं। और कभी-कभी जब आप इसे पढ़ते हैं, तो आप कुछ बातों को देखते हैं जैसे, उदाहरण के लिए, जब उत्पत्ति की पुस्तक शुरू होती है तो आपके पास उत्पत्ति 1:1-2:3.. है। हमारे पास परमेश्वर की तस्वीर है जो एक विशेष क्रम में सात दिनों में सृष्टि कर रहा है। परमेश्वर अपने वचन से सृष्टि करता है और यह परमेश्वर के शक्तिशाली होने, परमेश्वर के सृष्टिकर्ता होने, परमेश्वर द्वारा मानवता को अपने स्वरूप में रचने के बारे में एक शक्तिशाली वक्तव्य है। और फिर 2:4-25, दूसरे अध्याय में, हमारे पास सृष्टि की एक दूसरी कहानी है, जो कि ठीक एक के बाद उसी तरह की है। जब आप उस कहानी को देखते हैं, तो कुछ लोग उसमे विरोधाभासों को देखेंगे क्योंकि यहाँ परमेश्वर को परमेश्वर यहोवा कहा गया है। एक ऐसा परमेश्वर होने के बजाय जो वस्तुओं को अप्नेवचन के द्वारा अस्तित्व में लाता है,अब हमारे पास ऐसा परमेश्वर है जो वास्तव में नीचे आ रहा है; वह मनुष्यों की रचना करता है। यह कहता है कि वह मनुष्य को मिट्टी से बनाता है, दुनिया का प्रथम मनुष्य। और फिर वह उस आदमी से पहली स्त्री को रचता है। इस तरह, आप देखते है की परमेश्वर एक अदृश्य

> सृष्टिकर्ता परमेश्वर के जैसा होने के बजाय, एक ऐसा परमेश्वर है जो नीचे ऊतरता है, मानवीय शब्दों में कहें तो , अपने हाथों से वस्तुओं को बनाने के जैसा..। लेकिन उस अन्य कहानी का होना, जो असल में पूरक है, न कि विरोधाभासी है...। और फिर, हमें हमेशा याद रखना है कि अगर वहां वास्तव में विरोधाभास हैं, तो क्या हम वास्तव में यह सोचते हैं कि प्राचीन लोगों ने इन बातों को नहीं देखा था? मेरे कहने का अर्थ है, यह एक ध्यान देने योग्य बात है। वे बेवकूफ लोग नहीं हैं। यह एक अलग समय है, एक अलग संस्कृति, लेकिन उनके पास भी दिमाग है, और अपनी बुद्धि के अनुसार उन्होंने इन बातों को एक साथ रखा। और इस तरह दूसरी कहानी हमारा परिचय एक ऐसे परमेश्वर से कराती है जो हाँथों से काम करता है। ईश्वरीय-ज्ञान में हम इसे कहते हैं ऐसा परमेश्वर जो अंतर्निहित है, ऐसा परमेश्वर जो सृष्टि में ऊतरता है... और मैं सोचता हूँ कि पवित्र शास्त्र को पढ़ने का विश्वासयोग्य तरीका यही है कि इसे संदेह के साथ न पढ़ा जाए, लेकिन इसे समझने के भाव के साथ पढ़ा जाए। आप जानते हैं, मेरे प्रश्न हो सकते हैं, लेकिन यह विश्वास की खोज करने वाली समझ है, और सब कुछ ध्यान में रखते हुए, मैं विश्वास करता हूँ कि जो परमेश्वर चाहता है कि बाइबल में हो वह सब बाइबल में है, और एक पाठक के रूप में इसे ध्यानपूर्वक सुनना मेरा कार्य है, विशेषकर ऐसे स्थानों में जो मुझे परेशान कर सकते हैं, उन बातों को देखने की कोशिश करूँ, कि इन दो भिन्न बातों को कभी-कभी विरोधाभास में रखने के द्वारा परमेश्वर वास्तव में क्या कह रहा है। लेकिन हमें उसके लिए आभारी होना चाहिए क्योंकि विभिन्न स्थानों में विभिन्न समयों पर वे दो भिन्न तरह की तस्वीरें ज्यादा सार्थक रूप से हमसे बातें कर सकती हैं बनिस्बत किसी अन्य समय पर।
>
> डॉ. ब्रायन डी रसल

अब जब कि हमने उनकी पूर्वधारणाओं और लेखनकारिता के दृष्टिकोणों के संदर्भ में आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोणों को देख लिया है, तो अब हम कुछ मुख्य व्याख्यात्मक रणनीतियों पर विचार कर सकते है जिनका पालन आलोचनात्मक विद्वानों ने किया जब उन्होंने पेन्टाटच्यूक पर अध्ययन किया।

व्याख्यात्मक रणनीतियाँ

इन बातों को सारांशित करने के कई तरीके हैं, लेकिन हम आधुनिक आलोचनात्मक विद्वानों की पांच प्रमुख व्याख्यात्मक रणनीतियों पर बात करेंगे। हम इन रणनीतियों पर इनके विकास के क्रम में स्रोत आलोचना से शुरू करते हुए विचार करेंगे।

स्रोत आलोचना

स्रोत आलोचना, या जिस नाम से यह पहली बार बुलाया गया था, "साहित्यिक आलोचना," के. एच. ग्राफ की 1866 में प्रकाशित पुस्तक से शुरू हुई, जिसका शीर्षक द हिस्टोरिकल बुक्स ऑफ ओल्ड टेस्टामेंन्ट था। इसको और अधिक प्रसिद्ध व्याख्याकार जुलियस वेलहॉसन द्वारा 1883 में प्रकाशित अपने कार्य प्रोलेगोमेना टू द हिस्ट्री ऑफ इस्राएल में परिष्कृत किया गया था।

स्रोत आलोचकों का मानना था कि पेन्टाटच्यूक मौखिक परंपराओं से होकर विकसित हुआ था, ठीक अन्य प्राचीन धार्मिक पुस्तकों की तरह। लेकिन उन्होंने अपने ध्यान को पेन्टाटच्यूक के उन भागों की पहचान करने और व्याख्या करने में केंद्रित किया जो ये विश्वास करते थे कि वे स्वतंत्र स्रोतों से आए हैं जो कि इस्राएल के राजशाही समय के दौरान प्रकट हुए।

वेलहॉसन की शब्दावली के अनुसार, पेन्टाटयूक का सबसे पहला दस्तावेजी स्रोत, जो कि शुरू आती राजशाही में लिखा गया, उसे आम तौर पर यहोवावादियों के लिए "जे" माना गया। इसका नाम यह इसलिए है क्योंकि इस लिखित स्रोत के साथ परमेश्वर के जिस नाम की पहचान की गई है वह "यहोवा"- है जिसे जर्मन भाषा में "जे" के साथ बोला गया है, बहुत कुछ वैसा ही जैसे अंग्रेजी में "जेहोवा" नाम बोला जाता है। "जे" अनुच्छेद उत्पत्ति और निर्गमन की पुस्तकों में बिखरे हुए दिखाई देते हैं। स्रोत आलोचकों ने तर्क दिया है कि पेन्टाटयूक के ये अंश मूलतः यहूदा में 950 ईसा पूर्व के आसपास सुलेमान के दिनों के दौरान लिखे गये थे। इस दृष्टिकोण में, "जे" अनुच्छेद एक ऐसे दस्तावेज का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसने कि प्राचीन काल के बारे में बताया और दाऊद के वंश द्वारा इस्राएल के धर्म और समाज का केंद्रीयकरण एवं विनियमन का समर्थन किया।

पेन्टाटयूक का दूसरा लिखित स्रोत एलोहिस्ट के लिए "ई" माना गया है, क्योंकि इन अनुच्छेदों में परमेश्वर को सामान्य रूप से एलोहीम कहा गया है। "ई" सामग्री उत्पत्ति और निर्गमन में भी दिखाई देती है। इस सिद्धांत के अनुसार, "ई" स्रोतों को उत्तर में 850 ईसा पूर्व के आसपास लिखा गया, इस्राएल का दो राज्यों में विभाजन के बाद। "ई" स्रोत से आए अध्यायों ने उत्तरी राज्य से निकली भविष्यवाणी के विचारों को बढ़ावा दिया जो दाऊद के वंश के आलोचक थे।

एक तीसरे साहित्यिक स्रोत को "डी," या डियूट्रोनोमिस्ट कहा गया है। इसको यह नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि "डी" की सामग्री मुख्य रूप से व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में दिखाई देती है और कभी कभार पेन्टाटयूक के अन्य भागों में। इस सामग्री को आमतौर पर लगभग 622 ईसा पूर्व में योशिय्याह के सुधारों और बेबीलोन के हाथों 586 ईसा पूर्व में यरूशलेम के पतन के बीच दिनांकित किया गया है। एक आम सिद्धांत में, "डी" ने लेवियों के कामों का प्रतिनिधित्व किया था जो उत्तरी इस्राएल छोड़ कर यहूदा में आ गए थे। ये लेवी दाऊद के घराने के लिए वफादार थे, लेकिन उनके आलोचक भी थे।

अंत में, पेन्टाटयूक के विकास में एक चौथे प्रमुख साहित्यिक स्रोत को सामान्य रूप से "पी" कहा गया है, जो याजक के लेखक या लेखकों के लिए है। एक आम पुनर्निर्माण में, "पी" याजकों का एक समूह था जिन्होंने लैव्यवस्था को लिखा और पेन्टाटयूक के दूसरे भागों को ईसा पूर्व 500 और 400 के बीच में संकलित एवं संपादित किया। इस पुनर्निर्माण के अनुसार, जब इस्राएल के बचे हुए लोग निर्वासन के बाद लौटे तो “पी” ने ही पेन्टाटयूक को सामाजिक व्यवस्था एवं आराधना के लिए डिजाइन किया था।

अब, बीसवीं सदी के दौरान, सक्षम विद्वानों ने शायद ही स्रोत आलोचनातमकता के किसी पहलू को चुनौती न दी हो। फिर भी, इन दृष्टिकोणों के अवशेष पेन्टाटयूक पर लगभग हर आलोचनात्मक टीकाओं में अभी भी दिखाई देते हैं।

स्वरूप आलोचना

पेन्टाटयूक के लिए आलोचनात्मक दृष्टिकोण की एक दूसरी बड़ी रणनीति “स्वरुप आलोचना" को माना गया है।

स्वरुप आलोचना की शुरू आत पुराने नियम की पढ़ाई के एक विशेष क्षेत्र के रूप में हरमन गन्कल के कार्य द लीजेन्ड्स ऑफ जेनेसिस से शुरू हुआ जिसे 1901 में लिखा गया था। गन्कल और उसके अनुयायियों ने स्रोत आलोचना के प्रमुख सिद्धांतों को स्वीकार किया, लेकिन उन्होंने पेन्टाटयूक के विकास के एक पहले वाले पहलू पर ध्यान-केंद्रित किया। पेन्टाटयूक के लिखित स्रोतों पर ध्यान-केंद्रित करने के बजाय, स्वरूप आलोचकों ने उस पर ध्यान केंद्रित किया जिसे वे मौखिक परंपरा मानते थे जो इस्राएल के राजाओं के समय से पहले के थे।

उस समय जब स्वरूप आलोचना प्रसिद्ध था, तो विद्वानों ने उन तरीकों पर ध्यान दिया जिनमें मौखिक परंपराओं ने अनपढ़ जनजातीय संस्कृतियों में कार्य किया था। स्वरूप आलोचकों ने इन अध्ययनों को लागू किया जब उन्होंने शुद्ध, गतिशील, प्रा-साहित्यिक परंपराओं को खोजा जिन्होंने पेन्टाटयूक के दस्तावेजी स्रोतों को जन्म दिया।

स्वरूप आलोचना का तरीका मूल रूप से दोगुना था: एक ओर, स्वरूप आलोचकों ने प्राचीन मौखिक स्वरूपों, या शैलियों को खोजने के लिए अनुच्छेदों का विश्लेक्षण किया जैसे मिथक, लोक-कथाएं, कथाएं, रोमांस, किंवदंती, और दृष्टांत। दूसरी ओर, उन्होंने इन शैलियों को सांस्कृतिक संदर्भों के साथ जोड़ा जिन्हें इन मौखिक परंपराओं का "सित्ज इम लेबेन," या "जीवन की सेटिंग्स" कहते हैं। इन संदर्भों में आराधना, जनजातीय शिविर स्थल, पारिवारिक निर्देश, स्थानीय अदालतें और इन्हीं के जैसे।

उदाहरण के लिए, कई स्वरूप आलोचकों ने उत्पत्ति 32:22-32 पनीएल पर याकूब की कुश्ती की कहानी को एक ऐसी कहानी के रूप में देखा जिसे वास्तव में एक प्राचीन जनजाती के शिविर वाले आग के चारों ओर बताया जाता था। उन्होंने तर्क दिया था कि शुरू आत में यह याबोक नदी के उथले पानी पर यह आलोकिक, जादूई घटनाओं की कहानियों से निकली। इस पुनर्निर्माण में, यह काफी समय बाद में हुआ कि इस कहानी को एक जनजातीय व्यक्ति के साथ जोड़ा गया जिसका नाम याकूब था।

यह सुनिश्चित है, स्वरूप आलोचना ने बाइबल के परिच्छेदों की संरचनाओं और औपचारिक विशेषताओं के महत्व पर ठीक तरह से जोर दिया था। लेकिन, स्रोत आलोचना की तरह, स्वरूप आलोचना को भी कई तरीकों से चुनौती दी गई है। स्वरूप आलोचना के लिए चुनौतियां विशेष रूप से मौखिक रूपों और बाइबल के परिच्छेदों के पीछे सेटिंग्स के उनके अंदाजन वाले पुनर्निर्माणों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। फिर भी, हम अभी भी स्वरूप आलोचनात्मकता को पेन्टाटच्यूक की ओर मोड़ने की बजाय जैसा कि आज यह पवित्र शास्त्र के कैनन में मौजूद है, संदिग्ध पुनर्निर्माण की ओर कई आलोचनात्मक विद्वानों को मोड़ता पा रहे हैं।

परम्परा आलोचना

एक तीसरा प्रमुख तरीका जिसमें आलोचनात्मक विद्वानों ने पेन्टाटच्यूक की व्याख्या की है उसे अक्सर परंपरा आलोचना या परंपरा-ऐतिहासिक आलोचना कहा जाता है।

स्रोत और स्वरूप की आलोचना के निष्कर्षों पर आगे कार्य करते हुए, परंपरा आलोचकों ने इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि कैसे आदिम मौखिक परंपराएं और लिखित ग्रंथ जटिल ईश्वरीय-ज्ञान और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में विकसित हुए। 1948 में प्रकाशित अ हिस्ट्री ऑफ पेन्टाटच्यूकल ट्रेडीशन्स में मार्टिन नॉथ और 1957 में प्रकाशित अपने थियोलॉजी ऑफ द ओल्ड टेस्टामेन्ट में गेरहार्ड वॉन रेड जैसे अग्रणी विद्वानों ने पूछा कि कैसे पेन्टाटच्यूक विभिन्न परंपराओं के प्रभाव को प्रतिबिंबित करता है।

अन्य बातों के अलावा, परंपरा आलोचकों ने पहचान की थी जिसे वे विश्वास करते थे कि ये पेन्टाटच्यूक में पाये जाने वाले ईश्वरीय ज्ञान के विश्वासों के प्रतिस्पर्धी समुच्चय हैं। उन्होंने ध्यान दिया कि कैसे पेन्टाटच्यूक ने सृष्टि, कुलपिताओं, मिस्र से निर्गमन, और प्रतिज्ञा किए हुए देश की विजय जैसे विषयों पर विविध परंपराओं के समेकन को प्रतिबिंबित किया। उन्होंने इस्राएल की जातियों, दाऊद के सिंहासन और यरूशलेम के मंदिर आदि जैसे कुछ विषयों से संबंधित विचारों का भी पता किया था। और उन्होंने विश्वास किया कि ईश्वरीय ज्ञान की इन जटिल धाराओं ने कई प्रमुख विषयों को गहनता से प्रभावित किया जो पेन्टाटच्यूक में प्रकट होते हैं।

एक बार फिर, बहुत वर्षों के दौरान परंपरा आलोचना के अधिकांश विशिष्ट निष्कर्षों पर सवाल उठाया गया है। फिर भी, जब पुराने नियम के व्याख्याकार इस्राएल में परंपरा की विभिन्न धाराओं को प्रतिबिंबित करते हुए अनुच्छेदों के बारे में बात करते हैं जो आपस में एक दूसरे का विरोध करते या यहाँ तक कि प्रतिस्पर्धा करते हैं तो हम इस दृष्टिकोण के अवशेषों को देख सकते हैं।

संपादन आलोचना

एक चौथा प्रमुख तरीका जिसमें आलोचनात्मक व्याख्याकारों ने पेन्टाटच्यूक के विकास पर अध्ययन किया उसे संपादन आलोचना कहा गया है। जैसा कि "संपादन" शब्द इंगित करता है, इस

रणनीति ने यह ध्यान केंद्रित किया कि कैसे काल्पनिक दस्तावेजों को एक साथ पेन्टाटय़ूक में संपादित किया गया जैसा कि हम आज उसे जानते हैं।

संपादन आलोचना बीसवीं सदी में नए नियम के अध्ययन में नए नियम के सुसमाचारों के बीच भिन्नताओं को समझाने के एक तरीके के रूप में शुरू हुआ। संपादन आलोचकों ने विश्वास किया कि ये भिन्नताएं पहले से लिखी लेखों के संपादन और उन्हें फिर से आकार देने के कारण पैदा हुई।

इसी तरह की तकनीकों को पेन्टाटय़ूक पर लागू किया गया। समझाने की कोशिश की गई कि कैसे संपादकों ने पहले से लिखे स्रोतों जैसे "जे", "इ", और "डी" को लिया और उन्हें एक साथ बुना जब तक कि पेन्टाटय़ूक अपने अंतिम आकार में न पहुंच गया। इस दृष्टिकोण ने विशेष रूप से बाद वाले "पी के संपादन कार्य पर ध्यान केन्द्रित किया।

संपादन आलोचना के पास उत्पत्ति से लेकर व्यवस्थाविवरण की पुस्तकों की ओर ध्यान खींचने का लाभ था जैसा कि वे आज बाइबल में दिखाई देते हैं। लेकिन संपादन आलोचना स्रोत, स्वरूप और परंपरा आलोचना से एकदम अलग कभी भी नहीं हो पाई।

समकालीन आलोचना

इस बिंदु पर, हमें कुछ प्रवृत्तियों का उल्लेख करना चाहिए जो समकालीन आलोचना, या पेन्टाटय़ूक के लिए और अधिक वर्तमान प्रभावशाली आलोचनात्मक दृष्टिकोणों का विवरण देते हैं।

हाल के दशकों में, कई अग्रणी आलोचनात्मक व्याख्याकारों ने पुराने आलोचनात्मक ऐतिहासिक पुनर्निर्माण से आगे जाने की कोशिश की है। इसके बजाय, उन्होंने उल्लेखनीय ईश्वरीय ज्ञान की एकता और पेन्टाटय़ूक के पारंपरिक इब्रानी पाठ की गहराई पर ध्यान दिया है। इन तरीकों ने अलग-अलग रूपों को लिया है-लफ्फाजी आलोचना, विहित आलोचना, नई साहित्यिक आलोचना- कुछ ऐसे ही नाम है। लेकिन वे सब पेन्टाटय़ूक की व्याख्या उस रूप में करने पर ध्यान-केंद्रित करते हैं जिसमें कि यह आराधनालय और चर्च के माध्यम से हमें सौंप दिया गया है। अपने अंतिम रूप में पेन्टाटय़ूक का अध्ययन पुराने आलोचनात्क तरीकों से अधिक आशाजनक हैं। लेकिन समय ही बतायेगा कि ये ज्यादा समकालीन तरीकें क्या फल लायेंगे।

अभी तक अपने “पेन्टाटय़ूक के परिचय” में, बाइबल के इस हिस्से के लिए हमने आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोणों पर ध्यान-केंद्रित किया है। अब इस पाठ में हमें अपने दूसरे प्रमुख विषय की ओर बढ़ना चाहिए: पेन्टाटय़ूक पर आधुनिक सुसमचारिक दृष्टिकोण। आज सुसमाचारीक लोग बाइबल की पहली पांच पुस्तकों पर कैसा दृष्टिकोण रखते हैं?

आधुनिक सुसमाचारीक दृष्टिकोण

आपको याद होगा कि यहां पर अपने उद्देश्यों के लिए हमने सुसमचारिक लोगों को उस रूप में परिभाषित किया है जो पवित्र शास्त्र के पूर्ण अधिकार पर विश्वास करते हैं। कहने के जरूरत नहीं है, कि सुसमाचारीक लोगों ने हमेशा इस धारणा को ठीक एक ही तरीके से लागू नहीं किया है। लेकिन जैसा कि हम देखेंगे, पवित्र शास्त्र के अधिकार के लिए यह प्रतिबद्धता आज भी सुसमचारिक लोगों की अगवाई करती है। कि वे पेन्टाटय़ूक को आधुनिक आलोचनात्मक विद्वानों से अलग बहुत भिन्न तरह से देखें।

पेन्टाटय़ूक पर आधुनिक सुसमाचारीक दृष्टिकोणों को हम अपने पहले वाले विचार-विमर्श की समझ में सारांशित करेंगे। पहले, हम कुछ महत्वपूर्ण पूर्वधारणाओं को देखेंगे जिन्हें हमारी अगवाई करनी चाहिए। दूसरा, हम पेन्टाटय़ूक की लेखनकारिता पर सुसमाचारीक दृष्टिकोणों पर विचार करेंगे। और

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

तीसरा, हम कई प्रमुख सुसमाचारीक व्याख्या करने की रणनीतियों का सर्वेक्षण करेंगे। आइये पहले कुछ महत्वपूर्ण सुसमाचारीक पूर्वधारणाओं को देखते हैं।

पूर्वधारणाएं

हम अपने आप को दो पूर्वधारणाओं तक सीमित रखेंगे जो आलोचनात्मक और सुसमचारिक दृष्टिकोणों के बीच विरोधाभास दिखाते हैं। पहले, हम आलोकिकतावाद पर अपने विश्वास की जांच करेंगे। और दूसरा, हम इस्राएल के विश्वास के ऐतिहासिक विकास के बारे में अपनी पूर्वधारणाओं को देखेंगे। आइए पहले, हम आलोकिकतावाद पर अपने विश्वास को देखते हैं।

आलोकिकतावाद

> "अलौकिकतावाद" हमारी आधुनिक भाषा का प्रकार है जो "प्राकृतिक" से भिन्न है क्योंकि, ज़ाहिर है, अगर हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, तो हम यह भी विश्वास करते हैं कि परमेश्वर सभी चीजों के माध्यम से काम करता है। लेकिन जब से स्कॉटिश संदेहवादी दार्शनिक डेविड ह्यूम ने इस प्रकार का भेद बनाया और कहा, "ठीक है, हमारे पास अलौकिक गतिविधि में विश्वास करने का कोई कारण नहीं है," तब से यह एक मुद्दा बन गया है। और यह उन प्रमुख कारणों में से एक है कि कई लोगों के पास बाइबल की विश्वसनीयता के खिलाफ तर्क हैं, क्योंकि वे कहते हैं, अच्छा, बाइबल चमत्कारों से भरी है और हम जानते हैं कि चमत्कार नहीं होते हैं। खैर, हम क्यों जानते हैं कि चमत्कार नहीं होते हैं? क्योंकि डेविड ह्यूम ने वह "साबित" किया है। और आप पीछे जाते हैं और आप उसके तर्क को देखते हैं, और उसका तर्क बिल्कुल भी संतोषजनक या बहुत अच्छा नहीं है। वास्तव में, उसके तर्क की प्रमुख बातों में से एक यह है कि हमारे पास चश्मदीद गवाह नहीं हैं, जो-विश्वसनीय चश्मदीद गवाह हों-जो चमत्कार के अस्तित्व का दावा करते हों, निश्चित रूप से आज नहीं जब हम उसका परीक्षण कर सकते हैं। और फिर भी, यहां तक कि ह्यूम दिनों में भी, वहां पर विश्वसनीय प्रत्यक्षदर्शी थे कि परमेश्वर अभी भी चमत्कार को कर रहा था, और आज हमारे पास उन लोगों की एक अविश्वसनीय संख्या है.. । और अगर वे आज हो रहे हैं, हम यह उंम्मीद कर सकते हैं कि वे कितना अधिक उद्धार के इतिहास में महत्वपूर्ण परिस्थियों में हुए होंगे, जब परमेश्वर कार्य कर रहा था।
>
> डॉ. क्रेग एस. कीनर

पवित्र शास्त्र सिखाते हैं कि परमेश्वर इतिहास को सामान्य तरीके से निर्देशित करता है जो प्रत्यक्ष आदर्शों का पालन करते हैं। विवेक, बुद्धि और विज्ञान परमेश्वर से मिले उपहार हैं जो इन आदर्शों को समझने में हमारी मदद करते हैं। और इस कारण से, सुसमचारिक लोग पेन्टाटयूक में तर्कसंगत और वैज्ञानिक अनुसंधान को सही ठहराते हैं। लेकिन इसी समय में, यीशु के अनुयायियों को भी पता है कि परमेश्वर शामिल रहा है, और आज भी आलोकिक रीति से वह स्वयं को शामिल करना जारी रखे हुए है। परमेश्वर उन तरीकों से कार्य करता है जो आम प्रक्रियाओं और प्राकृतिक कारणों के विपरीत और उनसे परे और यहाँ तक की उनके खिलाफ होती हैं। यह विश्वास कई मायनों में पेन्टाटयूक के प्रति हमारे अध्ययन को प्रभावित करता है। लेकिन विशेष रूप से, यह हमें विश्वास दिलाता है कि परमेश्वर ने इन पवित्र शास्त्रों के लेखन को प्रेरित एवं संचालन किया था। इस तरह, वे अपने में पूरी तरह से आधिकारिक

और विश्वसनीय वचन हैं। बेशक, हमें हमेशा सावधान रहना होगा कि जो पेन्टाटयूक वास्तव में कहता है हम उसके साथ अपनी व्याख्याओं को भ्रमित न करे।

हमारी व्याख्याओं में हमेशा सुधार की गुंजाईश रहती है। लेकिन सुसमचारिक दृष्टिकोण से, जो कुछ भी पेन्टाटयूक वास्तव में सच होने का दावा करता है वह सच है क्योंकि यह परमेश्वर द्वारा प्रेरित है।

आलोकिकतावाद के बारे में हमारी पूर्वधारणाएं सीधे इस्राएल के विश्वास के ऐतिहासिक विकास के बारे में पूर्वधारणाओं की ओर ले जाती हैं।

ऐतिहासिक विकास

जैसा कि हमने देखा, आधुनिक आलोचनात्मक विद्वानों ने तर्क दिया है कि इस्राएल का विश्वास प्राचीन मध्य पूर्व में अन्य सभी धर्मों की ही तरह प्राकृतिक साधनों के द्वारा विकसित हुआ था। लेकिन सुसमचारिक लोग मानते हैं कि इस्राएल का विश्वास विशेष ईश्वरीय प्रकाशन के माध्यम से विकसित हुआ था। परमेश्वर ने वास्तव में स्वयं को सीधे पुरुषों और महिलाओं पर प्रकट किया था, आदम से शुरू करते हुए, और फिर नूह। और उसने इस्राएल के कुलपिताओं अब्राहम, इसहाक और याकूब से भी बातें की थी। उसने जलती हुई झाड़ी में मूसा को संबोधित किया था। उसने सीनै पर्वत पर इस्राएल के लिए अपनी व्यवस्था का खुलासा किया था। इस तरह के प्रकाशनों ने इस्राएल के विश्वास को प्राचीन मध्य पूर्व में अन्य धर्मों की तुलना में अलग रीति से विकसित होने में मदद करी। यह सुनिश्चित है, कि परमेश्वर के सार्वजनिक अनुग्रह और शैतान के प्रभाव ने इस्राएल के विश्वास और अन्य देशों के धर्मों के बीच समानताओं को पैदा किया। लेकिन इस्राएल का विश्वास सिर्फ स्वाभाविक रूप से विकसित नहीं हुआ था। इसके बजाय, परमेश्वर ने आलोकिक रीति से जैसा कि पेन्टाटयूक सिखाता है इस्राएल के शुरू वाती विश्वास के विकास को बढ़ने में अगवाई की थी।

हमने आधुनिक सुसमचारिक दृष्टिकोणों और पूर्वधारणाओं पर विचार किया है जो पेन्टाटयूक के लिए आलोचनात्मक दृष्टिकोणों के साथ विरोधाभास करते हैं। इन दृष्टिकोणों ने पेन्टाटयूक के लेखनकारिता के बारे में विषम विश्वासों को जन्म दिया। आलोचनात्मक विद्वान् इस विचार का तिरस्कार करते हैं कि पेन्टाटयूक मूसा के दिनों से आया होगा। लेकिन सुमाचारीय लोग बहुत समय पुराने यहूदी और मसीही विश्वास की पुष्टि करते हैं कि पेन्टाटयूक मूसा से आया।

लेखनकारिता

पेन्टाटयूक की लेखनकारिता पर सुसमाचारीक दृष्टिकोणों की जांच करने के लिए, हम दो दिशाओं में देखेंगे। सबसे पहले, इस दृष्टिकोण के लिए हम बाइबल में पाए गए कुछ प्रमाणों पर ध्यान देंगे। और दूसरा, हम यह स्पष्ट करेंगे कि कैसे आधुनिक सुसमचारिक लोग उसमें विश्वास करते हैं जिसे "अनिवार्य मूसा की लेखनकारिता" कहा गया है। आइए मूसा की लेखनकारिता के लिए कुछ बाइबल के प्रमाणों के साथ शुरू करते हैं।

बाइबल के प्रमाण

पारंपरिक दृष्टिकोण से देखें तो यह मानने के लिए कि मूसा पेन्टाटयूक का लेखक था पवित्र शास्त्र में पर्याप्त प्रमाण शामिल हैं। लेकिन समय को ध्यान में रखते हुए, हम बाइबल में नए नियम के तीन अलग भागों में पाए जाने वाले कुछ प्रमाणों के साथ शुरू करेंगे, और केवल कुछ ही पदों पर विचार करेंगे। लूका 24:44 को सुनिए, जहां यीशु ने कहा:

> जितनी बातें मूसा की व्यवस्था, भविष्यद्वक्ताओं और भजनों में, मेरे विषय में लिखी हैं सब पूरी हों (लूका 24:44)।

यहाँ, यीशु ने पूरे पुराने नियम का उल्लेख तीन भागों में किया, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह कोई अन्य यहूदी मूसा, भविष्यद्वक्ताओं और भजनसहिंता के दिनों में करता। इन पदनामों के माध्यम से, लूका ने स्पष्ट रूप से संकेत दिया कि यीशु ने पेन्टाटयूक, या तोरह को, मूसा के साथ जोड़ा था।

यीशु ने यहून्ना 5:46 में पेन्टाटयूक के लेखक के रूप में मूसा का उल्लेख किया, जहां उसने कहा:

> यदि तुम मूसा की प्रतीति करते, तो मेरी भी प्रतीति करते, इसलिए कि उस ने मेरे विषय में लिखा है (यूहन्ना 5:46)।

यीशु की अपनी गवाही के अलावा, अन्य नए नियम के पद पेन्टाटयूक के विशेष भागों का उल्लेख ऐसे करते हैं जैसे वे मूसा के द्वारा ही लिखे गए है। हम इसे मरकुस 7:10, यूहन्ना 7:19, रोमियो 10:5, और 1 कुरिन्थियों 9:9 जैसे स्थानों में देखते हैं।

वास्तव में, मूसा की लेखनकारिता के लिए नए नियम का समर्थन पुराने नियम की गवाही पर आधारित था। और कई अवसरों पर, पुराने नियम की किताबें मूसा के साथ पेन्टाटयूक को जोड़ती हैं। उदाहरण के लिए, 2 इतिहास 25:4 को सुनिए:

> [अमस्याह] ने उस आज्ञा के अनुसार किया, जो मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखी है (2 इतिहास 25:4)।

इसी तरह के पुराने नियम के कई वचन भी पेन्टाटयूक के साथ मूसा को जोड़ते हैं, जिसमें 2 इतिहास 35:12; एज्रा 3:2 और 6:18; और नहेमयाह 8:1 और 13:1 जैसे पद शामिल हैं।

हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि सामान्यतः नए नियम और पुराने नियम की गवाही उस पर आधारित है जो स्वयं पेन्टाटयूक अपने लेखक के बारे में कहता है। स्पष्ट रूप से कहे तो, ज्यादातर पेन्टाटयूक गुमनाम है। व्यवस्थाविवरण के पहले पद को छोड़ कर, मूसा का नाम किसी भी रीति से किसी भी पुस्तक के न तो शुरू आत में पाया जाता है और न ही अंत में, जो इस बात को दर्शा सके कि यह उसके द्वारा लिखी गयीं है। लेकिन प्राचीन मध्य पूर्व में यह कोई असामान्य बात नहीं थी। न ही यह पवित्र शास्त्रों के लिए भी यह कोई असामान्य बात थी। वास्तव में, स्वयं पेन्टाटयूक ही स्पष्ट बयान देकर पुष्टि करता है कि मूसा ने परमेश्वर की ओर से प्रकाशन प्राप्त किया था और वह पेन्टाटयूक की संरचना के लिए जिम्मेदार था। उदाहरण के लिए, निर्गमन 24:4 हमें बताता है कि निर्गमन 20:18 – 23:33 में पाये जाने वाली वाचा की पुस्तक को मूसा ने लिखी थी। लैव्यवस्था 1:1-2 में हम सीखते हैं कि लैव्यवस्था में विधियाँ मूसा के माध्यम से इस्राएल को दी गई थी। व्यवस्थाविवरण 31:1 और 32:44 में, हमें बताया गया है कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में निहित भाषणों को मूसा ने दिया था। संक्षेप में, पेन्टाटयूक साफ और स्पष्ट रूप से दावा करता है कि उसके प्रमुख भागों में लिखित तथ्य को प्राप्त करने और संचारण करने में मूसा सक्रिय रूप से शामिल था।

ये एवं बाइबल के अन्य प्रमाण बताते हैं कि क्यों सुसमाचारीक लोग पेन्टाटयूक की लेखनकारिता के बारे में आलोचनात्मक परिकल्पना का मजबूती से विरोध करते हैं। जाहिर है, पवित्र शास्त्र आलोचनात्मक पुनर्निर्माण का समर्थन नहीं करता है, जिसका मानना है कि पेन्टाटयूक मूसा के जीवन के बहुत बाद में लिखा गया था। अगर हम पुराने और नए नियमों की गवाही का पालन करें, तो हम निश्चिंत हो सकते हैं कि हमें पेन्टाटयूक को मूसा के साथ जोड़ने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

> पेन्टाटयूक अनिवार्य रूप से स्वयं को मूसा के साथ सम्बंधित होने के रूप में प्रस्तुत करता है यह प्रस्तुत करता है। और यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि मूसा निर्गमन से लेकर व्यवस्थाविवरण तक पाए जाने वाले प्रमुख पात्रों में से एक है। और ग्रन्थ भी स्वयं को उस रूप में प्रस्तु.,त करते है जिससे काफी हद तक ये साबित होता है कि यह मूसा के समय से है। उदाहरण के लिए, हमें निर्गमन में बताया गया है... कि यहोवा ने मूसा से वाचा की पुस्तक लिखने के लिए कहा था,

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

> जो निर्गमन 21 से 23 तक है। हमें लैव्यव्यवस्था की किताब मेताया गया है कि हमारे पास भाषणों और व्यवस्था की एक श्रृंखला है जो मूसा द्वारा प्रस्तुत किए गए हैं। जाहिर है, गिनती की पुस्तक में मूसा मुख्य चरित्र है। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में हमारे पास भाषणों की एक श्रृंखला है जिसे मूसा ने दिया था, और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के भीतर कई बार हमें बताया गया है कि मूसा ने इस भाग को लिखा और उसे याजकों को सौंप दिया। अब, इसका मतलब यह नहीं है की मूसा ने पूरी किताब को लिखा जिस रूप में आज हम इसे देखते है, लेकिन व्यवस्थाविवरण की पुस्तक स्वयं हमें बताती है कि पुस्तक के ज्यादातर भागों को या पुस्तक का बड़ा हिस्सा, मूसा ने लिखा और फिर याजकों को सौंप दिया। तो, उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण में, मूसा चाहे अंतिम लेखक या अंतिम वाचक था या नहीं भी, लेकिन यह स्पष्ट है कि हमारे पास जो किताबें है उसका 90% भाग मूसा ने खुद लिखा था।
>
> डॉ. गॉर्डन एच. जॉनसन

यह देखने के बाद कि मूसा की लेखनकारिता की मूल अवधारणा को बाइबल के प्रमाणों द्वारा समर्थन प्राप्त है, हमें अब दूसरे विचार की ओर बढ़ना चाहिए। आधुनिक सुसमाचारीक लोगों का अनिवार्य मूसा की लेखनकारिता कहने से क्या तात्पर्य है?

मूसा की मूलभूत व्यवस्था

जब सुसमाचारीक लोग ने जब भी पेन्टाटच्यूक पर आलोचनात्मक दृष्टिकोणों का प्रत्युत्तर दिया हैं, तो उन्होंने कई तरीकों से अपने प्रत्युत्तरों को प रिष्कृत किया। लेकिन बीसवीं सदी के मध्य तक, पेन्टाटच्यूक के लिए "अनिवार्य मूसा की लेखनकारिता" के बारे में बोलना आम बन गया था।

जिस तरीके से एडवर्ड जे. यंग ने इस दृष्टिकोण को 1949 में प्रकाशित, अपने ईन्ट्रोडक्शन टू द ओल्ड टेस्टामेन्ट में सारांशित किया है उसे सुनिए:]

> जब हम पुष्टि करते हैं कि मूसा ने...पेन्टाटच्यूक को लिखा, तो हमारा मतलब यह नहीं है कि उसने स्वयं प्रत्येक शब्द को लिखा था...[हो सकता है उसने] पहले से लिखे दस्तावेज़ो के हिस्सों का सहारा लिया होगा। साथ में, ईश्वरीय प्रेरणा के आधीन हो कर, पर्याप्त रूप और अनिवार्य रूप से बाद में उसमे छोटे परिवर्धन और यहाँ तक कि संशोधन किए गए होंगे।, तथापि, यह मूसा का ही कार्य है।

अब, सुसमाचारीक लोगों ने मूसा के लेखनकारिता पर इस दृष्टिकोण की बारीकियों को कई मायनों में समझा है। लेकिन एक स्तर पर या दूसरे पर, हम "मूसा की मूलभूत व्यवस्था" की बात अपने आप को तीन कारकों को याद दिलाने के लिए करते हैं जिन्हें हमें हमेशा ध्यान में रखना चाहिए: वे स्रोत जिनका प्रयोग मूसा ने किया, जिस प्रक्रिया के द्वारा पेन्टाटच्यूक को लिखा गया था, और पेन्टाटच्यूक का अद्यतन जो मूसा के दिनों के बाद हुआ था। आइए पहले स्रोतों पर विचार करें जिनका मूसा ने इस्तेमाल किया था।

स्रोत। पवित्र शास्त्र हमें बताता हैं कि परमेश्वर ने अपने आप को अलग-अलग तरीकों से मूसा पर प्रकट किया था। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने स्वयं अपनी उंगली से दस आज्ञाओं लिखा था। और वाचा की पुस्तक में वो आज्ञाएं है जिसे परमेश्वर ने मूसा को सीनै पर्वत पर दिया था। लेकिन, पवित्र शास्त्र के कई अन्य भागों की तरह यहाँ भी ऐसे कई संकेत मिलते हैं जिससे की यह स्पष्ट होता है कि जब मूसा पेन्टाटच्यूक को लिख रहा था तो उसने अतिरिक्त स्रोतों का भी इस्तेमाल किया था।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

एक तरफ, शायद उसने विविध मौखिक परंपराओं का इस्तेमाल किया। उदाहरण के लिए, इस बात के पूरी संभावना है कि मूसा ने अपने शुरूआती बचपन के दौरान अपने जन्माने वाली मां और विस्तारित परिवार से कुछ बातें सीखी थी। इसके अलावा, हम निर्गमन 18:17-24 में देखते हैं कि मूसा अपने ससुर, यित्रो से जो कि मिद्यान देश का था, के निर्देशो के प्रति भी काफी ग्रहणशील था।

> किसी भी समय जब हम पेन्टाटचूक के किसी भी भाग के पीछे मौखिक परंपराओं के बारे में बात करते हैं, जिसमें अतिप्राचीन इतिहास या कुछ अन्य भाग शामिल हैं, तो यह थोड़ा अस्पष्ट प्रतीत होता है क्योंकि जाहिर है इसके लिए कोई ठोस सबूत नहीं है। जब आप कहते है कि यह "मौखिक" है, तो इस बात का यही मतलब है कुछ भी लिखा नहीं गया। लेकिन जब आप इसके बारे में सिर्फ एक मिनट के लिए सोचते हैं, तो दो बातें हमारे ज़हन में आतीं हैं जो यह एहसास करने में हमारी मदद करते हैं कि शायद मूसा ने सिर्फ एक ही दिन में इन कहानियों को नहीं सोचा था, और न ही परमेश्वर ने बिना किसी तरह की मौखिक पृष्ठभूमि के सिर्फ एक ही दिन में उसे इन कहानियों को बताया था। उस बात का एक प्रमाण इस एक तथ्य को माना जा सकता है कि आदिम संस्कृतियां आज भी बहुत कुछ कहानी सुनाने पर निर्भर है और पीढ़ी दर पीढ़ी अपने लोगों की बहुत सारी प्राचीन कहानियों को बार –बार सुनाया जाता रहा है, और अक्सर यह बाइबल के समय के समानांतर है जब लोग इसी तरह की बातों को करते होंगे। और पूर्ण रूप से, पेन्टाटचूक में इसका सबसे ठोस सबूत हमारे पास यह है कि निर्गमन और गिनती में पाई जाने वाली कहानियों को अक्सर व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में दोहराया गया है। और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में, हमें इसका सन्दर्भ देखने को मिलता है की मूसा जहाँ कहीं भी भाषण या उपदेश दे रहा है तो उसके भाषण में वे तत्व शामिल हैं जिन्हें हम निर्गमन और गिनती की पुस्तकों में भी पाते हैं। लेकिन उनके बारे में दिलचस्प बात यह है, कि समान होते हुए भी वे वास्तव में पूर्णतः या सटीक रूप से एक जैसे नहीं हैं। मूसा के दिनों में इस्राएल में एक तरह की संस्कृति प्रचलित थी, उन दिनों में अतीत में से कहानियों को लेकर या अतीत के किस्सों और बीती हुई बातों को पीढ़ी दर पीढ़ी पारित किया जाता था और फिर उनका प्रयोग विशेष रूप से उस संदर्भ में करना जिसमें वे आप रहते थे। और बेशक, आप जानते हैं कि मूसा अपने जीवन के शुरू आती वर्षों में अपनी माता के घर में बड़ा हुआ था, और इन्ही समयों में उसे अपने पूर्वजों के बारे में क्या उनकी कहानियों को जानने का अवसर मिला होगा, एक इब्री के रूप में उसने अपनी पहचान को जाना, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो अब्राहम से निकला था। और, ज़ाहिर है, जब मूसा ने इस्राएल के प्राचीनों के साथ बातचीत की होगी, यहां तक कि यित्रो के साथ अपना समय गुजार कर लौटने पर, तो वह और भी उन सुनी हुई कहानियों से सीख रहा होगा जो उसके पूर्वजों के लिए विशिष्ट थी। तो इस तरह से, विचार करने के लिए एक अच्छा कारण है कि मूसा, जब वह पेन्टाटचूक के विभिन्न भागों को लिख रहा था तो वास्तव में वह मौखिक परंपराओं, या कहानियों पर निर्भर था, जो कि पीढ़ी दर पीढ़ी बताई जाती थी, ।
>
> डॉ. रिचर्ड एल. प्रैट, जूनियर

मौखिक परंपराओं के प्रभाव जलती झाड़ी में मूसा की बुलाहट की एक उल्लेखनीय विशेषता को बताते हैं। जो बात निर्गमन 3:13, 16 में घटित होती है उसे सुनिए:

> मूसा ने परमेश्वर से कहा, ' ' मान लीजिए मैं इस्राएलियों के पास जाकर उनसे कहता हूं, 'तुम्हारे पिताओं के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, ' और वे मुझसे पूछते हैं, ' उसका नाम क्या है?' तब मैं उनको क्या बताऊँ?"..."उनसे [क]हना, 'तुम्हारे पितरों के परमेश्वर, यहोवा, — अब्राहम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर ने-मुझे दर्शन दिया'" (निर्गमन 3:13, 16)।

ध्यान दें कि परमेश्वर ने मूसा से सीधे तौर पर कहा कि वह उसे "प्रभु" -या यहोवा-"अब्राहम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर के रूप में संबधित करे ।" किसी ने अवश्य ही मूसा को ईश्वरीय नाम यहोवा और कुलपिताओं की परंपराओं के बारे में सिखाया होगा। अन्यथा, परमेश्वर के कथन मूसा के मन में अनगिनत प्रश्नों को उठाते। लेकिन, जैसा कि हम यहां पर देखते हैं, परमेश्वर के निर्देश प्राप्त करने के लिए मूसा इतना अच्छी तरह से तैयार था कि उसने उस बारे में कोई सवाल नहीं किया।

हम और भी अधिक आश्वस्त हो सकते हैं कि जब मूसा पेन्टाटच्यूक को लिख रहा था तो उसके स्रोतों में स्वतंत्र दस्तावेज भी शामिल थे। हम इसे निर्गमन 24:7 जैसे स्थानों में देखते हैं। यह पद इंगित करता है कि मूसा ने "वाचा की पुस्तक" को एक स्वतंत्र दस्तावेज़ के रूप में लिखा था जिसको उसने बाद में निर्गमन की किताब में शामिल किया। और गिनती 21:14-15 में, मूसा ने एक मौजूदा पुस्तक "यहोवा का युद्ध" नामक पुस्तक" से भौगोलिक संदर्भ का हवाला दिया था।

इस के अलावा, उत्पत्ति 5:1 में, हम जो पढ़ते हैं वह संभवतः बाहरी साहित्यिक स्रोत के लिए एक स्पष्ट संदर्भ है जिसे "आदम की वंशावलियों की पुस्तक" कहा गया है। जैसा कि यह शाब्दिक अनुवाद इंगित करता है, मूसा ने शायद उस जानकारी को इंगित किया था जो कि उसने एक वास्तविक "पुस्तक" या "स्क्रॉल" से प्राप्त किया था -इब्रानी में סֵפֶר (सेफेर)-आदम के वंशजों के बारे में।

इसके अलावा, निर्गमन 17:14 लड़ाई के एक रिकॉर्ड को संदर्भित करता है। इस पद में, परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी थी:

> स्मरणार्थ इस बात को पुस्तक में लिख ले और सुनिश्चित कर कि यहोशू इसको सुने (निर्गमन 17:14)।

मूसा के लिए परमेश्वर की आज्ञा संकेत देती है कि इससे पहले कि मूसा ने पूरे के पूरे पेन्टाटच्यूक को एक किताब के रूप में लिखने के पहले, स्वतंत्र रूप से कम से कम कुछ घटनाओं को दर्ज किया था।

> जब आप पेन्टाटच्यूक को देखते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है, विशेषकर उत्पत्ति की पुस्तक में, कि मूसा वास्तव में बहुत ही प्राचीन दस्तावेजों को शामिल कर रहा था। हम जानते है कि मूसा, वास्तव में, चार भाषाओं का जानकार रहा होगा। मूसा मिस्री भाषा जानता था। वह ईब्रानी जानता था क्योंकि वह एक इब्रानी परिवार में पाला-पोसा गया था; उसकी माँ ही उसकी धाई माँ भी थी। हम यह भी जानते है कि वह उस समय की आम भाषा को जानता होगा, अंतरराष्ट्रीय व्यापार और राजनयिक भाषा जिसे अक्काडियन कहते थे। और वह अरामी भाषा को भी जानता होगा, क्योंकि अरामी वह भाषा है जिसे कि इस्राएली लोग अपने शुरू आती दिनों में बोला करते थे -अब्राहम, इसहाक, याकूब एवं और भी। इस तरह, मूसा एक बहुत, ही अच्छी तरह से प्रशिक्षित और शिक्षित व्यक्ति था, और जिस तरह से उसने उत्पत्ति की पुस्तक को संगठित किया उससे प्रतीत होता है कि वह हमें बता रहा है कि वह कुछ विशेष दस्तावेजों का उपयोग कर रहा था, क्योंकि दस बार वह हमसे कहता है, "...की वंशावली यह है" या अमुक अमुक "... का वृतांत यह है"। और ऐसा लगता है कि ये वे वृतांत है जिन तक उसकी पहुँच थी, जिनको उसने संरक्षित किया था, जिनका उसने अनुवाद किया था, शायद, कुछ मूल भाषा

> से, आंशिक रूप से अरामी भाषा से, या पहले की कनानी भाषा से, इब्रानी भाषा में जिसको उसने लोगों के लिए लिखा था जिनके लिए वह उत्पत्ति को लिख रहा था। जरूरी नहीं कि यह मामला उत्पत्ति के बाद का था। एक बार जब आप लैव्यवस्था और गिनती में आते हैं और उससे आगे, और निश्चित रूप से निर्गमन और व्यवस्थाविवरण में, एक बार जब आपको पेन्टाटयूक की अंतिम चार किताबें मिलती हैं, तो हम समझते है की मूसा उन्हें उसी स्थान में, घटनास्थल पर ही लिख रहा है। वह वहीं पर है; वह उन्हें घटित होता देख रहा है। और सबसे महत्वपूर्ण बात, कि परमेश्वर ऐसा कर रहा है क्योंकि उन पुस्तकों का सबकुछ परमेश्वर के नबी के द्वारा लिखे परमेश्वर के वचन हैं।
>
> डॉ. डगलस स्टुअर्ट

पेन्टाटयूक के लिए मौखिक और साहित्यिक स्रोतों को स्वीकार करने के अलावा, जब सुसमचारिक लोग अनिवार्य मूसा की लेखनकारिता की बात करते हैं तो वे यह भी स्वीकार करते हैं कि पेन्टाटयूक को वास्तव में एक जटिल प्रक्रिया के माध्यम से लिखा गया था।

प्रक्रिया। शुरू करने के लिए, मूसा ने ज्यादातर पेन्टाटयूक को इससे पहले कि वह वास्तव में लिखा गया इसे मौखिक प्रवचन के माध्यम से दिया था। निर्गमन और व्यवस्थाविवरण में उसके भाषण हमें इसके स्पष्ट उदाहरण प्रदान करते हैं। और यह संभावना है कि पेन्टाटयूक के अन्य भागों को भी पहले मौखिक रूप से इस्राएल को दिया गया था और फिर बाद में लिखा गया।

इसकी भी बहुत संभावना है कि मूसा ने लिपिकारों -मुंशियो या शास्त्रियों-को पेन्टाटयूक की रचना के लिए कार्य पर लगाया था। हम जानते हैं कि मूसा को मिस्र के महलों में पढ़ाया गया था। तो, वह सरकारी दस्तावेजों को लिखने के लिए शास्त्रियों और मुंशियों का उपयोग करने की प्रथा से अच्छी तरह से परिचित होगा । इस्राएल के अगुवे के रूप में, यदि पूरा पेन्टाटयूक न भी हुआ हो तौभी ज्यादातर लिपिकारों को उसने अपनी ही देखरेख में लिखने के लिए नियुक्त किया था।

पवित्र शास्त्र से यह स्पष्ट है कि अन्य प्रेरणा पाये हुए बाइबल के लेखकों ने भी शास्त्रियों को काम पर लगाया था। उदाहरण के लिए, यिर्मयाह 36:4 में, यिर्मयाह नबी ने स्पष्ट रूप से अपने शिष्य बारूक को अपने वचनों को लिखने के लिए आज्ञा दी।

हम लोग इस प्रथा के प्रमाण को मूल रूप से पेन्टाटयूक के अनियमित साहित्यिक शैलियों में देख सकते हैं। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति के विभिन्न भागों में प्रकट होने वाली कथा शैलियां एक दूसरे से काफी अलग हैं। और हम व्यवस्थाविवरण के सूत्रों और दुहराव वाली इब्रानी भाषा और पेन्टाटयूक के बाकी सभी पुस्तकों के बीच उल्लेखनीय अंतर को देखते हैं। सभी संभावना में, इन जैसी विविधताएं अलग-अलग शास्त्रियों के द्वार काम किये जाने की तरफ संकेत देती है।

अनिवार्य मूसा की लेखनकारिता न केवल स्रोतों और प्रक्रिया पर बात करती है जिनका मूसा ने इस्तेमाल किया, लेकिन यह मूसा के समय के बाद पेन्टाटयूक के अद्यतन पर भी बात करती है।

अद्यतन। जैसा कि हमने देखा, आलोचनात्मक व्याख्याकार संपूर्ण पेन्टाटयूक को उस रूप में देखते है जो कि अपने अंतिम रूप में इस्राएल के बंधुवाई से लौटने के बाद पहुंचा। लेकिन सुसमाचारीक लोगों ने माना है कि पेन्टाटयूक का जन्म मूसा के दिनों में हुआ था। फिर भी, पेन्टाटयूक के कुछ ऐसे भाग हैं जो मूसा के दिनों के बाद मामूली संपादन अद्यतन को दिखाते हैं।

अब, जब हम पेन्टाटयूक के विशेष भागों की तारीख तय करते हैं तो हमें बहुत सावधान रहना होगा। उदाहरण के लिए, व्याख्याकारों ने सुझाव दिया है कि हर एक अध्याय जिसमें "पलिश्तियों" का उल्लेख है वे जरूर मूसा के दिनों के बाद लिखे गये होंगे। लेकिन यह दृष्टिकोण कम से कम तीन कारणों से समझ से परे हैं। सबसे पहला, क्षेत्र में पलिश्तियों की उपस्थिति के विषय में मौजूद पुरातात्विक आंकड़ा

विवादित है। दूसरा, मूसा ने "पलिश्ती" (जिसका अर्थ है "यात्री") शब्द का इस्तेमाल एक समाजशास्त्रीय पदनाम के रूप में किया होगा। और तीसरा, अगर "पलिश्ती" शब्द मूसा के समय में ज्ञात भी नहीं था, तौभी यह हमेशा संभव है कि "पलिश्ती" का उपयोग मूसा के दिनों के बाद के श्रोताओं की मदद करने के लिए सिर्फ एक मामूली अद्यतन के रूप में किया गया हो।

इसी तरह से, व्याख्याकारों ने तर्क दिया है कि उत्पत्ति 36:31-43 में एदोम के शासकों की सूची मूसा के जीवनकाल से कहीं आगे चली है। लेकिन उत्पत्ति में सूचीबद्ध एदोम के शासकों की पहचान निश्चित नहीं है। और यह भी संभव है कि इन अध्यायों में मूसा के समय के बाद जोड़े गए सूचियों के मामूली विस्तार किया गया हैं।

पेन्टाटयूक में एक छोटे से अद्यतन का स्पष्ट उदाहरण उत्पत्ति 14:14 में प्रकट होता है। वहां हम पढ़ते हैं:

> जब अब्राम ने सुना कि उसके रिश्तेदार को बंदी बना लिया गया था तो उसने अपने घर में पैदा हुए 318 प्रशिक्षित पुरुषों को बुलाया और दान तक उनका पीछा किया(उत्पत्ति 14:14)।

यह पद कहता है कि अब्राहम ने अपने दुश्मनों का पीछा “दान तक” किया। लेकिन हम यहोशू 19:47 में पढ़ते हैं कि इस उत्तरी क्षेत्र का नाम दान यहोशू के दिनों तक नहीं पड़ा था। इस तरह, पवित्र शास्त्र स्वयं संकेत देते हैं कि उत्पत्ति 14:14 एक अद्यतन स्थान के नाम को दर्शाता है। इस प्रकार के आधुनिकीकरण ने अब्राहम की कहानी के साथ भूगोल को जोड़ने में बाद आने वाले पाठकों की मदद की होगी जिसे वे जानते थे। और इसकी संभावना है कि पेन्टाटयूक में कई अन्य अनुच्छेदों को भी इसी तरह से अद्यतन किया गया है।

शायद सबसे अच्छी तरह से ज्ञात और सबसे महत्वपूर्ण अद्यतन जो कि पेन्टाटयूक में पाया जाता है वह व्यवस्थाविवरण 34 में मूसा की मौत का रिकॉर्ड है। लेकिन यहां पर भी, हमारे पास परिशिष्ट से थोड़ा ही ज्यादा है जो वर्णन करता है कि इस्राएल के व्यवस्था देने वाले के साथ क्या हुआ था।

इन जैसे मामूली अद्यतन के अलावा जब इब्रानी भाषा का विकास हुआ तो पेन्टाटयूक की भाषा का भी अद्यतन किया गया। हाल के अनुसंधान दृढ़ता से सुझाव देते हैं कि मूसा ने उस भाषा में लिखा था जिसे विद्वानों ने "आदिम-इब्रानी" कहा है। मिस्र में पाए गए "अमर्ना पत्र" के रूप में प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय दस्तावेजों से पाए गए सबूत इंगित करते हैं कि इस प्रकार की इब्रानी भाषा मूसा के दिन में इस्तेमाल होने वाली कनानी बोली से काफी संबंधित थी। लेकिन जो हम पेन्टाटयूक के पारंपरिक इब्रानी पाठ में पाते हैं ये भाषा उससे बहुत पहले की है।

> पुराने नियम की भाषा पर सवाल एक दिलचस्प बात है। यह भाषा कब हुई... यह कहां से आई? इसका जन्म कहां से हुआ? यह ऐसी बात है जिसने लोगों को एक लंबे समय से हैरान किया है, क्योंकि पुरातत्व से जो सबूत हमारे पास है उनके अनुसार, क्या कोई इब्रानी लेख मौजूद भी है, प्राचीन इब्रानी? और हमारे पास बहुत सारे ग्रंथ हैं जिन्हें हाल में, लगभग बीसवीं सदी में ही खोजा गया है। लेकिन ये सब बहुत देर से आये। ये मूसा के समय के बाद से आये...और इस तरह, आप इस के साथ क्या कर सकते हैं। खैर, हमारे पास तेरहवी सदी, चौदहवी सदी ईसा पूर्व से सबूत हैं जो कि एक पूरा कूटनीतिक पत्राचार है, एक संग्रह जिसे खोदा गया, लेकिन कनान में नहीं, इस्राएल की भूमि - जो कि बाद में इस्राएल देश बनेगा-लेकिन ये दस्तावेज मिस्र में मिले ... और वे अक्काडियन में लिखे हैं, जो ऐसी भाषा है जिसका जन्म वास्तव में मेसोपोटामिया में हुआ, लेकिन यह लोकभाषा है, यह उस समय की कूटनीति की अंतरराष्ट्रीय भाषा है। लेकिन वे कनानी हैं, वे स्थानीय लोग हैं जो मिस्र के अपने शासकों को लिख रहे हैं, और उनके पास वहाँ

> पर थोड़ा किनारे पर कुछ टिप्पणियां भी हैं, और ये कनानी भाषा में लिखे हैं। और फिर यह हमारा संबंध है। तो यह कनानी भाषा है जो हमें मूसा के समय की इब्रानी भाषा से जोड़ती है। अब, ज़ाहिर है, हमारे पास कोई भी रिकॉर्ड नहीं है, हमारे पास मूसा के युग की इब्रानी भाषा का कुछ भी बचा नहीं है, लेकिन यह हमारी कड़ी है, यह हमारे लिए एक सेतु के सामान है। तो, यह कनानी किनारे की कनानी टिप्पणियों से आता है कि हमारे पास मूसा के समय की इब्रानी से इब्रानी भाषा है जिसे हम बाइबल की मानक इब्रानी भाषा के रूप में जानते हैं जिसमें बंधुवाई से पूर्व के अधिकांश इब्रानी और बंधुवाई से पहले का पाठ आता है। इस तरह, यह हमारी कड़ी है। यह अप्रत्यक्ष है, लेकिन यह असली है, और यह पर्याप्त है।
>
> डॉ. टॉम पेटर

इस्राएल के राजाओं के समय, 1000 ईसा पूर्व और 600 ईसा पूर्व के बीच, भाषा का विकास उसमे हुआ जिसे अब "पुरानी" या "जिवाश्म इब्रानी" कहते हैं। कई विद्वान सहमत होंगे कि पेन्टाटय़ूक के हिस्से इस समय की इब्रानी भाषा से मेल खाते हैं, जैसे कि निर्गमन 15 और व्यवस्थाविवरण 32 के कुछ हिस्से।

लेकिन पेन्टाटय़ूक का बहुत बड़ा हिस्सा शब्दावली, वर्तनी और व्याकरण में उससे मेल खाता है जिसे अब हम "शास्त्रीय इब्रानी भाषा" कहते हैं, इब्रानी भाषा के विकास में एक ऐसा पड़ाव है जिसका इस्तेमाल मध्य आठवीं और शुरूआती छठी शताब्दी ईसा पूर्व के बीच में हुआ था।

इस प्रमाण से, यह प्रतीत होता है कि आदिम-इब्रानी जिसका प्रयोग स्वयं मूसा ने किया था उसका अद्यतन जीवाश्म-इब्रानी में हो गया था। फिर इसके बाद में शास्त्रीय इब्रानी भाषा में आधुनिकरण हो गया जैसा कि अब हमारे पास इब्रानी बाइबल में है।

यह याद रखना हमेशा महत्वपूर्ण है कि यीशु और उनके प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के दिनों में, पेन्टाटय़ूक की इब्रानी भाषा पहले से ही इन प्रकार के परिवर्तनों से होकर गुजर चुकी थी। लेकिन इस तथ्य ने यीशु या उनके अनुयायियों को उनके दिनों के पेन्टाटय़ूक को इस रूप में देखने से हतोत्साहित नहीं किया था कि जो कुछ मूसा ने लिखा यह उसका ईमानदारी से प्रतिनिधित्व करता है। इसी तरह, आज मसीह के अनुयायियों के रूप में, हम आश्वस्त हो सकते हैं कि पेन्टाटय़ूक, जैसे कि वह अब हमारे पास है विश्वासयोग्यता के साथ मूसा के मूल लेखन का प्रतिनिधित्व करता है।

अभी तक, हमने आधुनिक सुसमचारिक दृष्टिकोणों को देखा है और कुछ महत्वपूर्ण पूर्वधारणाओं पर ध्यान किया है जो सुसमाचारीक लोग द्वारा पेन्टाटय़ूक के लिए लेकर आया। और हमने देख लिया है कि सुसमाचारीक लोग बाइबल के इस भाग की लेखनकारिता पर कैसा दृष्टिकोण रखते हैं। अब, आइए कुछ तरीकों पर ध्यान देते हैं जिनमें इन दृष्टिकोणों ने व्याख्यात्मक रणनीतियों को प्रभावित किया है जिनका पालन सुसमाचारिक लोग करते हैं।

व्याख्यात्मक रणनीतियाँ

इन व्याख्यात्मक रणनीतियों का वर्णन करने के कई तरीके हैं, लेकिन हम तीन मुख्य दिशाओं की बात करेंगे जिनका पालन सुसमाचारीक लोगों ने किया है। पहले हम विषयगत व्याख्या पर विचार करेंगे। उसके बाद हम ऐतिहासिक व्याख्या की खोज करेंगे। और अंत में, हम साहित्यिक व्याख्या की जांच करेंगे। यह तीनो रणनीतियाँ एक दूसरे पर अत्यधिक निर्भर है और एक दूसरे से अलग होकर कभी भी काम नहीं करती हैं। लेकिन वे अलग-अलग महत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसलिए विषयगत व्याख्या के साथ शुरू आत करते हुए उन पर एक-एक करके विचार करने में मदद मिलेगी।

विषयगत

विषयगत व्याख्या में, पेन्टाटच्यूक हमारे लिए एक दर्पण के सामान है जो उन मुद्दों पर ध्यान करने के लिए हमारी सहायता करता है जो हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं। सुसमाचारीक लोगों ने वैध रूप से बाइबल के इस भाग के कुछ शीर्षकों या विषयों पर जोर दिया है। लेकिन जैसा कि हम आगे देखेंगे कि, पेन्टाटच्यूक में हर किताब की अपनी –अपनी प्राथमिकताएं है। तो, स्वयं मूसा द्वारा इन विषयों पर बल दिया गया है और नहीं भी दिया गया है। इस दृष्टिकोण ने हजार वर्षो से मसीही व्याख्या को पहचान दी है।

उन विषयों की सूची जिन पर मसीही लोगों ने जोर दिया है काफी लंबी है। कुछ ने व्यक्तिगत सवालों और हाल के उठे विवादों पर जोर दिया है। अन्य लोगों ने पारंपरिक व्यवस्थित ईश्वरीय-ज्ञान में अपने दृष्टिकोणों को समर्थन देने के लिए पेन्टाटच्यूक का इस्तेमाल किया है। उदाहरण के लिए, पेन्टाटच्यूक परमेश्वर के बारे में कई बातों का उजागर करता है। साथ में यह मानवता के विभिन्न पहलूओं को भी बहुत समय लेकर स्पष्ट करता है। और साधारणतः बाकी की सृष्टि पर यह बहुत ध्यान देता है।

अब, विषयगत व्याख्या की सबसे बड़ी कमी यह है कि अकसर वह इस तथ्य को, कि मूसा के मूल विषय इस्राएलियों के लिए थे जो उसके पीछे चलते हुए प्रतिज्ञा किए हुए देश की और बढ़ रहे थे, कम करता है। और क्योंकि इस मूल संदर्भ पर थोड़ा ध्यान दिया जाता है, विषयगत व्याख्याएं अक्सर छोटे विषयों की ओर ध्यान आकर्षित करने से थोड़ा अधिक ही हैं।

फिर भी, हमें हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि नया नियम पेन्टाटच्यूक के इस दृष्टिकोण को सत्यापित करता है। यीशु और नए नियम के लेखक जब विश्वास, तलाक, विश्वास और कर्म, और कई अन्य अपेक्षाकृत छोटे विषयों को बाइबल के इस भाग में देखते थे तो वे मूसा की पुस्तकों का ही जिक्र करते थे। तो, जब तक हम इन पवित्र शास्त्रों में विषयों को न पढ़ने के लिए सावधान रहते हैं, विषयगत व्याख्या पेन्टाटच्यूक के लिए एक मूल्यवान दृष्टिकोण हो सकता है।

विषयगत व्याख्या की व्याख्यात्मक रणनीति के अलावा, सुसमाचारीक लोगों के लिए पेन्टाटच्यूक को उस तरीके से खोजना आम रहा है जिसे हम ऐतिहासिक व्याख्या कह सकते हैं।

ऐतिहासिक

सुसमाचारीक लोग न केवल यह विश्वास करते हैं कि पेन्टाटच्यूक में पाए जाने वाले ईश्वरीय-ज्ञान के विषय सत्य हैं। लेकिन, यीशु और उनके प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के उदाहरण का पालन करते हुए, हम यह भी मानते है कि पेन्टाटच्यूक में लिखा प्राचीन इतिहास भी सत्य है। इस कारण से, सुसमाचारीक लोगों ने अक्सर पेन्टाटच्यूक की व्याख्या अतीत की घटनाओं की खोज के साधन के रूप में की है।

हमने उल्लेख किया है कि विषयगत व्याख्यात्मक रणनीतियाँ पेन्टाटच्यूक को एक दर्पण के समान देखता है जो कि उन विषयों को व्यक्त या प्रकट करता है जो हमारी रूचि की होती हैं। लेकिन, ऐतिहासिक विश्लेषण पेन्टाटच्यूक को इतिहास की एक खिड़की की तरह मानता है। हम मूसा की पुस्तकों के माध्यम से होकर देखते हैं, जैसे कि वह था और उस इतिहास की खोज करते है जो असल में इसके पीछे है।

उत्पत्ति सृष्टि से लेकर यूसुफ के दिनों तक के इतिहास को बताता है। निर्गमन की मुख्य कहानी यूसुफ की मौत से उस समय तक फैली है जब इस्राएल सिनै पर्वत के नीचे मूसा के साथ डेरा डाले था। लैव्यवस्था कुछ व्यवस्थाओं और अनुष्ठानों पर प्रकाश डालता है जिन्हें मूसा ने सीनै पर्वत पर प्राप्त किया था। गिनती सीनै पर्वत से मोआब के मैदानों तक पहली और दूसरी पीढ़ियों के कूच को बताती है। और व्यवस्थाविवरण मोआब के मैदानों पर इस्राएल के लिए मूसा के भाषणों पर विस्तार से प्रकाश डालता है जब वे कनान में प्रवेश करने वाले ही थे। ऐतिहासिक व्याख्या में, सुसमचारिक लोगों ने इस बल्कि स्पष्ट ऐतिहासिक अभिविन्यास का लाभ उठाया है।

ऐतिहासिक व्याख्या जितनी भी मूल्यवान रही हो, पेन्टाटच्यूक के लिए इस दृष्टिकोण की अपनी सीमाएं भी हैं। बहुत कुछ विषयगत विश्लेषण की तरह, ऐतिहासिक व्याख्या मूसा और उसके मूल

श्रोताओं की ओर अपेक्षाकृत कम ध्यान देता है। इसके बजाय, अभिविन्यास उस ओर है जो परमेश्वर ने समय के विभिन्न कालों में किया इससे पहले कि पेन्टाटच्यूक की पुस्तकों को लिखा गया। आदम और हव्वा के साथ परमेश्वर ने क्या किया? नूह के जल-प्रलय का क्या महत्व था? परमेश्वर के साथ अब्राहम ने कैसे बातचीत की? जब इस्राएल ने समुद्र को पार किया तब परमेश्वर ने क्या हासिल किया? ये वैध लक्ष्य हैं, लेकिन वे लेखक के रूप में मूसा और मूल श्रोताओं के रूप में इस्राएल के महत्व को कम करते हैं।

जाहिर है, सुसमचारिक लोग पेन्टाटच्यूक के विषयगत व्याख्या और ऐतिहासिक व्याख्या से कई प्रकारों से लाभांवित रहे हैं। लेकिन हाल के दशकों में, एक तीसरा अभिविन्यास सामने आया है, जिसे हम साहित्यिक व्याख्या कह सकते हैं।

साहित्यिक

जैसा कि हमने देखा, विषयगत विश्लेषण पेन्टाटच्यूक को एक दर्पण के रूप में देखता है जो कि उन विषयों पर प्रकाश डालता जो हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं। ऐतिहासिक विश्लेषण पेन्टाटच्यूक को पेन्टाटच्यूक के लिखे जाने से पहले की ऐतिहासिक घटनाओं की एक खिड़की के रूप में देखता है। इसके विपरीत, साहित्यिक विश्लेषण पेन्टाटच्यूक को एक चित्र के रूप में देखता है, कला का एक साहित्यिक कार्य जिसको अपने मूल श्रोताओं को विशेष तरीकों से प्रभावित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। मूलतः, साहित्यिक व्याख्या पूछता है: जब मूसा पेन्टाटच्यूक को लिख रहा था तो वह किस तरह अपने मूल इस्राएली श्रोताओं को प्रभावित करने का इरादा रखता था?

यह कहना उचित है कि मूसा के कई उद्देश्य थे। लेकिन सामान्य शब्दों में इन उद्देश्यों का वर्णन करने से मदद मिलती है। तो, हम मूसा को इस्राएल पर परमेश्वर द्वारा नियुक्त किये गए अगवे के रूप में देखते हुए , उसके लक्ष्य का वर्णन करेंगे:

> मूसा ने पेन्टाटच्यूक को इसलिए लिखा था ताकि वह इस्राएल को तैयार करे की वे परमेश्वर की विश्वासयोग्य सेवा करते हुए प्रतिज्ञा किए हुए देश पर विजय पाने और उसमे बसने के लिए आगे बढ़ते रहे।

अमूर्त में विषयों के एक वर्गीकरण को छूने, या सिर्फ ऐतिहासिक रूचियों के लिए घटनाओं के साथ काम करने के बजाय, एक या दूसरे तरीके में पेन्टाटच्यूक में प्रत्येक विषय और ऐतिहासिक अभिलेख इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किये गए थे।

साहित्यिक व्याख्या स्वीकार करती है कि जब मूसा पेन्टाटच्यूक को लिख रहा था तो वह समय के दो कालों के बीच खड़ा था। एक तरफ, मूसा ने उस बारे में लिखा जिसे हम कह सकते हैं "प्राचीन संसार," की घटनाएं जो कि अतीत में घटी थी। उत्पत्ति की पुस्तक में लिखी घटनाएं मूसा के दिनों के बहुत पहले घटी थी। निर्गमन और लैव्यवस्था मिस्र से बाहर निकली पहली पीढ़ी के काल में घटित घटनाओं पर ध्यान-केंद्रित करते हैं। गिनती और व्यवस्थाविवरण पहली पीढ़ी से होकर दूसरी पीढ़ी के दिनों तक के समय की घटनाओं को शामिल करते हैं। जब मूसा ने पेन्टाटच्यूक की प्रत्येक पुस्तक को लिखा तो अतीत के ये विभिन्न काल उसके मन में थे।

दूसरी ओर, तथापि, मूसा ने “उनके संसार” अर्थात, अपने मूल श्रोताओं के दिनों के लिए भी लिखा था। अपने दर्शकों को सिखाने के लिए कि उन्हें "उनके संसार" में परमेश्वर की सेवा को किस तरह से समझना चाहिए, किस तरह कार्य करना, और महसूस करना चाहिए, मूसा ने "प्राचीन संसार" के अतीत से निष्कर्षों को निकाला। अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए, मूसा ने "प्राचीन संसार" के बारे में ऐसे ढंग से लिखा जिससे की इसको "उनके संसार" के साथ जोड़ा जा सके।

मूसा ने अतीत को अपने मूल श्रोताओं से तीन मुख्य तरीकों से जोड़ा था। उसने उनके सामने अतीत की कहानियों को प्रस्तुत किया, उन कहियों ने उसके श्रोताओं के वर्तमान अनुभवों की पृष्ठभूमि या उत्पत्ति को स्थापित किया था। उसने ऐसे नमूने भी दिए जिससे वे यह जान सकें की कब और किस तरह

इनका पालन करना है या अस्वीकार करना है। और अपने श्रोताओं के संसार के पूर्वाभास या झलक के रूप में उसने अपनी कहानियों को आकार दिया था।

कई बार, मूसा ने इन संबंधों को अपेक्षाकृत स्पष्ट बनाया था। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 15:12-16 में, मूसा ने उन्हें मिस्र से बाहर निकाल लाने के लिए परमेश्वर के किये वादे के बारे में बताया। इस प्रतिज्ञा को उनके दिनों में पूरा किया गया था। उत्पत्ति 2:24 में, मूसा ने बताया कि आदम और हव्वा का विवाह परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों के बीच होने वाले विवाह के लिए एक नमूना था। और उत्पत्ति 25:23 में मूसा ने बताया कि उनकी माता के गर्भ में याकूब और एसाव के बीच की लड़ाई उसके मूल इस्राएली श्रोताओं और उनके दिन में एदोमियों के बीच के संघर्ष का पूर्वाभास था।

"प्राचीन संसार" और "उनके संसार" के बीच स्पष्ट संबंध पेन्टाटयूक में यहां वहां दिखाई देते हैं। लेकिन अधिकांश भाग के लिए, ये संबंध अस्पष्ट या अव्यक्त थे। इसलिए, साहित्यिक व्याख्या के मुख्य कार्यों में से एक कार्य यह समझना है कि कैसे मूसा ने अतीत के "प्राचीन संसार" को अपने मूल दर्शकों और "उनके संसार" से जोड़ा है।

सदियों से, पेन्टाटयूक की व्याख्या ने विषयगत और ऐतिहासिक रणनीतियों पर साहित्यिक विश्लेषण से कहीं ज्यादा जोर दिया है। इसलिए, मूसा की पुस्तकों के विषय में तैयार किये गए हमारे पाठों में, हम अपने ज्यादातर समय को साहित्यिक व्याख्या के लिए इस्तेमाल करेंगे। हम यह जानने की कोशिश करेंगे कि अपने श्रोताओं को पृष्ठभूमि, नमूने, और पूर्वाभास प्रदान करने के लिए मूसा ने कैसे अपनी प्रत्येक पुस्तक की सामग्री को रचा और आकार दिया। हम पता करेंगे कि मूसा ने अपने मूल श्रोताओं को ध्यान में रखते हुए किस बात पर अधिक जोर दिया, उसने उनके जीवनों के साथ अपनी पुस्तकों में लिखी बातों को कैसे जोड़ा, और उनके दिनों में परमेश्वर की विश्वासयोग्य सेवा करते रहने हेतु उसने अपने मूल इस्राएली श्रोताओं की अगुवाई किस प्रकार से की थी।

उपसंहार

पेन्टाटयूक के इस परिचय में, हमने बाइबल के इस हिस्से पर आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोणों की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं की जांच की है। हमने विचार किया कि कैसे आलोचनात्मक व्याख्याकारों की पूर्वधारणाओं ने पेन्टाटयूक की लेखनकारिता और विशेष प्रकारों की व्याख्याओं के प्रति एक निश्चित दृष्टिकोणों को पैदा किया है। हमने आधुनिक सुसमाचारिक दृष्टिकोणों को भी देखा और यह भी कि कैसे आधुनिक सुसमाचारिक लोगों की पूर्वधारणाओं ने लेखनकारिता और व्याख्या के एक बहुत ही अलग दृष्टिकोण को जन्म दिया है।

जैसे-जैसे हम पेन्टाटयूक की छानबीन करना जारी रखेंगे, वैसे –वैसे हम इन परिचयात्मक विचारों को कई बार सामने आता देखेंगे। और जब वे ऐसा करते हैं, तो हम बाइबल के इस आरंभिक भाग की व्याख्या करने के लिए स्वयं को बेहतर रूप से समर्थ पायेंगे। साथ-साथ, हम इन सवालों पर विचार करेंगे जैसे कि: मूसा ने पेन्टाटयूक की प्रत्येक पुस्तक को क्यों लिखा? इन पुस्तकों का मूल उद्देश्य क्या था? मूसा के मूल श्रोताओं के लिए पेन्टाटयूक के निहितार्थ क्या थे? इन सवालों का जवाब देने के द्वारा, हम मूसा की किताबों के मूल अर्थ की ओर महत्त्वपूर्ण झुकावों की खोज करेंगे। और न केवल हम यह देखेंगे कि कैसे बाइबल की पहली पांच पुस्तकों ने मूसा के दिनों में इस्राएल के विश्वास के आरंभिक मानक के रूप में काम किया था, और हम यह भी पता करेंगे कि मसीह का पालन करते हुए कैसे ये पुस्तकें हमारे विश्वास के मानक के रूप में कार्य कर सकती है।